# CENTRAL SANSKRIT UNIVERSITY

Ganga Nath Jha Campus, Prayagraj, U.P.

Name of the Programme- M.A. in Sanskrit

द्विवर्षीय एम.ए. (संस्कृत) कार्यक्रम चार सत्रार्द्धों में विभक्त होगा। प्रथम सत्रार्द्ध में पाँच Core Course (CC) एवं एक Extra Curricular Activities (ECA) होगी। द्वितीयसत्रार्द्ध में पाँच Core Course एवं एक Internship होगा। तृतीयसत्रार्द्ध में तीन Discipline Specific Core Course (DSCC), दो Core Course एवं एक Extra Curricular Activities होगी। चतुर्थसत्रार्द्ध में तीन Discipline Specific Core Course, एक लघुशोधप्रबन्धलेखन एवं एक Extra Curricular Activities होगी।

- M.A. Ist Semester — 5 Core Course (CC) + 1 Extra Curricular Activities(ECA)
- M.A. IInd Semester — 5 Core Course + 1 Internship
- M.A. IIIrd Semester — 3 Discipline Specific Core Course (DSCC) + 2 Core Course + 1 Extra Curricular Activities
- M.A. IVth Semester — 3 Discipline Specific Core Course + 1 Dissertation + 1 Extra Curricular Activities

प्रत्येक पाठ्यक्रम (Course) 100 अङ्क का होगा। प्रत्येक पाठ्यक्रम के 100 अङ्क में से 60 अङ्क लिखित परीक्षा पर आधारित होंगे तथा 20 अङ्कनिर्धारितपठनीयग्रन्थ सूची में से चुने हुए ग्रन्थों के स्वाध्याय पर आधारित होंगे, जिसका मूल्यांकनप्रदत्त कार्य एवं प्रस्तुति के आधार पर किया जायेगा। इसके अतिरिक्त 20 अङ्कनिर्धारितपाठ्यांश पर आधारित परियोजना एवं प्रस्तुतिआदि के होंगे। लघुशोधप्रबन्ध 100 अङ्क का होगा।

| वर्ष | प्रथम भाग | द्वितीयभाग |
|---|---|---|
| प्रथमवर्ष - 48 क्रेडिट् | प्रथमसत्रार्द्ध- 22 क्रेडिट् | द्वितीयसत्रार्द्ध - 26 क्रेडिट् |
| द्वितीयवर्ष - 42 क्रेडिट् | तृतीयसत्रार्द्ध - 22 क्रेडिट् | चतुर्थसत्रार्द्ध - 20 क्रेडिट् |
| | कुल | 90क्रेडिट् |

# Discipline Group

- वेद (A)
- व्याकरण (B)
- दर्शन (C)
- साहित्य (D)
- भारतीय ज्ञान परम्परा (E)

## प्रथमसत्रार्द्ध

| क्र.सं. | Course Code | Course Name | क्रेडिट् |
|---|---|---|---|
| | CC 1 | अष्टादशविद्यास्थान एवं वैदिक वाङ्मय | 04 |
| | CC 2 | लौकिक संस्कृत साहित्य का सामान्य अध्ययन एवं काव्यशास्त्र | 04 |
| | CC 3 | भारतीय दर्शन का सामान्य अध्ययन एवं भारतीय तर्कशास्त्र | 04 |
| | CC 4 | भारतीय संस्कृति इतिहास पुराण एवं धर्मशास्त्र | 04 |
| | CC 5 | संस्कृत व्याकरण | 04 |
| | ECA 1 | पाठ्येतरगतिविधियाँ | 02 |
| | | सत्रार्द्धक्रेडिट योग | 22 |

7/12/20

# द्वितीयसत्रार्द्ध

| क्र.सं. | Course Code | Course Name | क्रेडिट् |
|---|---|---|---|
| | CC 6 | व्याकरण एवं भाषा विज्ञान | 04 |
| | CC 7 | पाणिनीय शिक्षा एवं निरुक्त | 04 |
| | CC 8 | भारतीय दर्शन का विशिष्ट अध्ययन एवं पाश्चात्त्य दर्शन | 04 |
| | CC 9 | संस्कृत काव्य | 04 |
| | CC 10 | पाण्डुलिपि, पुरालिपि एवं अभिलेख | 04 |
| | INTERNSHIP 1 | प्रशिक्षुतासेवा | 06 |
| | | सत्रार्द्धक्रेडिटयोग | 26 |
| | | सत्र का सम्पूर्ण क्रेडिट योग | 48 |

| | |
|---|---|
| निष्क्रमण के समय प्राप्तव्यउपाधि | संस्कृत विद्यास्नातकोत्तरडिप्लोमा<br>(P.G. Diploma in Sanskrit Studies) |

# तृतीयसत्रार्द्ध

| Sl.No. | Course Code | Course Code (Group Wise) | Course Name | Credits |
|---|---|---|---|---|
| | DSCC 1 | DSCC 1A (वेद) | ऋग्वेदसंहिता एवं निरुक्त | 04 |
| | | DSCC 1B (व्याकरण) | व्याकरण शास्त्र की परम्परा | |
| | | DSCC 1C (दर्शन) | न्यायवैशेषिक | |
| | | DSCC 1D (साहित्य) | गद्य एवं पद्य | |
| | | DSCC 1E (भारतीय ज्ञान परम्परा) | भारतीय ज्ञानपरम्परा परिचय एवं शिक्षाव्यवस्था | |
| | DSCC 2 | DSCC 2A (वेद) | यजुर्वेद एवं अथर्वसंहिता | 04 |
| | | DSCC 2B (व्याकरण) | प्राचीन पाणिनीयव्याकरण | |
| | | DSCC 2C (दर्शन) | साङ्ख्य योग | |
| | | DSCC 2D (साहित्य) | नाटक | |
| | | DSCC 2E (भारतीय ज्ञान परम्परा) | प्राचीन भारत में कला, विज्ञान एवं गणित (सामान्य अध्ययन) | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | DSCC 3 | DSCC 3A (वेद)<br>DSCC 3B (व्याकरण)<br>DSCC 3C (दर्शन)<br>DSCC 3D (साहित्य)<br>DSCC 3E<br>(भारतीय ज्ञान परम्परा) | ब्राह्मण<br>नव्यपाणिनीयव्याकरण<br>वैदिक एवं अवैदि दर्शन<br>काव्यशास्त्रीयसिद्धान्त<br>प्राचीन भारतीय समाजव्यवस्था | 04 |
| | CC 11 | - | शोधपद्धति एवं तन्त्रयुक्तियाँ | 04 |
| | CC 12 | - | संस्कृत विद्या अनुसंधान की वैश्विकप्रवृत्तियाँ एवं नव अनुसंधान की सम्भावनाएँ | 04 |
| | ECA 2 | - | पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ | 02 |
| | | | सत्रार्द्धक्रेडिट योग | 22 |

# चतुर्थसत्रार्द्ध

| Sl.No. | Course Code | Course Code (Group Wise) | Course Name | Cradit |
|---|---|---|---|---|
| | DSCC 4 | DSCC 4A (वेद)<br>DSCC 4B (व्याकरण)<br>DSCC 4C (दर्शन)<br>DSCC 4D (साहित्य)<br>DSCC 4E (भारतीय ज्ञान परम्परा) | ऋग्वेद एवं देवता<br>व्याकरणप्रक्रिया<br>मीमांसा दर्शन परिचय<br>नाटक एवं नाट्यशास्त्र<br>कौटलीयअर्थशास्त्र तथा समाज एवं नागरिक | 04 |
| | DSCC 5 | DSCC 5A (वेद)<br>DSCC 5B (व्याकरण)<br>DSCC 5C (दर्शन)<br>DSCC 5D (साहित्य)<br>DSCC 5E (भारतीय ज्ञान परम्परा) | प्रातिशाख्य एवं स्वरप्रक्रिया<br>व्याकरण दर्शन<br>वेदान्त दर्शन<br>काव्यशास्त्र<br>पाश्चात्य एवं आधुनिक भारतीय विचारक तथा विश्व पर योग का प्रभाव | 04 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | DSCC 6 | DSCC 6A (वेद)<br>DSCC 6B (व्याकरण)<br>DSCC 6C (दर्शन)<br>DSCC 6D (साहित्य)<br>DSCC 6E (भारतीय ज्ञान परम्परा) | श्रौतसूत्र, पाश्चात्त्यआलोचना एवं निबन्ध<br>वैदिक व्याकरण एवं निरुक्त<br>न्यायदर्शन, निबन्ध एवं भारतीय दर्शन का इतिहास<br>पाश्चात्त्यआलोचना एवं निबन्ध<br>प्राचीन भारत एवं विश्व | 04 |
| | DIS-SERTA-TION | | लघुशोधप्रबन्ध | 06 |
| | ECA 3 | | पाठ्य सहगामीगतिविधियाँ | 02 |
| | | | सत्रार्द्धक्रेडिट योग | 20 |
| | | | सत्र का सम्पूर्ण क्रेडिट योग | 42 |
| | | | चारोंसत्रार्द्धों का सम्पूर्ण क्रेडिट योग | 90 |

| | |
|---|---|
| निष्क्रमण के समय प्राप्तव्यउपाधि | एम.ए. संस्कृत |

# MA Sanskrit

## Semester-1

## Paper - I

## Course Code SAN-CC1

## Core Course

Title of Course –अष्टादशविद्यास्थान एवं वैदिकवाङ्मय क्रेडिट - 04

### उद्देश्य -

- अष्टादशविद्यास्थानसे सामान्यरूप से परिचित कराना।
- संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद्आदिग्रन्थोंके स्वरूप का सामान्यरूप से परिचय प्राप्त कराना।
- वैदिक सूक्त के माध्यम से वैदिक देवताओं के विषय में सामान्य ज्ञान प्राप्त कराना।
- वैदिक संवादसूक्तोंके माध्यम से उनमें निहित शिक्षाओं से परिचित कराना।

### संगति-

- अष्टादशविद्यास्थान एवं वेद के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश -

- अष्टादशविद्यास्थानसामान्यरूप से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद्आदिग्रन्थोंके स्वरूप का सामान्यरूप से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- वैदिक सूक्त के माध्यम से वैदिक देवताओं के विषय में सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- वैदिक संवादसूक्तोंके माध्यम से उनमें निहित शिक्षाओं से परिचित हो सकेंगे।

इकाई 1 अष्टादशविद्यास्थान - क्रेडिट– 01

वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद), वेदांग (शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द,ज्योतिष, कल्प) पुराण, न्याय,मीमांसा, धर्मशास्त्र, चार उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, अर्थशास्त्र)।

इकाई 2 वैदिक साहित्य का सामान्यपरिचय:- क्रेडिट - 01

संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् साहित्य।

इकाई 3 सूक्त क्रेडिट– 01

अग्नि (1.1), वरुण (1.25), इन्द्र (2.12), ज्ञान (10.71) पुरुष (10.90)
हिरण्यगर्भ (10.121),नासदीय (10.129), शिवसंकल्प, अध्याय - 34 (1-6)

इकाई 4 संवादसूक्त क्रेडिट- 01

पुरुरवा-उर्वशी, यम-यमी, सरमा-पणि, विश्वामित्र-नदी

## परामृष्टग्रन्थसूची –


- ❖ वैदिक साहित्य और संस्कृति - आचार्यबलदेवउपाध्याय
- ❖ वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - डा. कपिलदेवद्विवेदी
- ❖ ऋग्वेदसंहिता( सायणभाष्य सहित )
- ❖ वैदिकसाहित्यएवंसंस्कृति, डॉ.कपिलदेवद्विवेदी, विश्वविद्यालयप्रकाशन
- ❖ वेदशाखापर्यालोचनम्, प्रो. श्रीकिशोरमिश्रः
- ❖ ऋक्सूक्तसंग्रह, हरिदत्त शास्त्री, साहित्य भंडार, मेरठ
- ❖ ऋग्वेदीय संवाद सूक्त

MA Sanskrit

Semester- 1

Paper - II

Course Code – SAN-CC2

Core Course

Title of Course – लौकिक संस्कृत साहित्य का सामान्य अध्ययन एवं काव्यशास्त्र क्रेडिट - 04

## उद्देश्य -

- संस्कृत साहित्य के काव्यविधाओं से परिचित कराना ।
- संस्कृत साहित्य के कवियों से परिचित कराना ।
- काव्यशास्त्र के सिद्धान्तोंके विश्लेषण की सामर्थ्य निष्पादन कराना।

## संगति -

- संस्कृत काव्य एवं काव्यशास्त्र के मध्यतारतम्यता का अध्यापनकराना ।

## फलितांश–

- संस्कृत साहित्य के काव्यविधाओं से परिचित हो सकेंगे ।
- संस्कृत साहित्य के कवियों से परिचित हो सकेंगे ।
- काव्यशास्त्र के सिद्धान्तोंका विश्लेषण कर सकेंगे।

इकाई 1 संस्कृत काव्य – विधाएँ, उद्भव एवं विकास क्रेडिट 01

1.1. रामायण

1.2. महाभारत

1.3. निम्नलिखित का सामान्य परिचय

(भास, कालिदास, अश्वघोष, भारवि, माघ, बिल्हण, श्रीहर्ष)

इकाई2 संस्कृत कवि क्रेडिट- 01

2.1शूद्रक, विशाखदत्त, हर्ष, भवभूति, भट्टनारायण

2.1दण्डी, बाणभट्ट, सुबन्धु, अम्बिकादत्तव्यास

इकाई 3 काव्यप्रकाश क्रेडिट– 01

3.1 प्रथम उल्लास

3.2द्वितीयउल्लास

इकाई 4 काव्यप्रकाश क्रेडिट - 01

4.1शब्दालङ्कार - अनुप्रास, यमक, वक्रोक्ति

4.2अर्थालङ्कार– उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, श्लेष, व्यतिरेक, स्वाभावोक्ति, काव्यलिङ्ग, अर्थान्तरन्यास, विभावना, विशेषोक्ति। समासोक्ति, अपह्नुति, निदर्शना, सङ्कर, संसृष्टि, विरोधाभास, दृष्टान्त

## परामृष्टग्रन्थसूची –


- संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास – आचार्यबलदेवउपाध्याय, संस्कृत संस्थान, नयाहैदराबाद, लखनऊ
- संस्कृत साहित्य का इतिहास – वाचस्पतिगैरोला, चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी
- संस्कृत साहित्य कासमीक्षात्मक इतिहास, डॉ. कपिलदेवद्विवेदी, प्रकाशन रामनरायणलाल विजय कुमार, इलाहाबाद
- काव्यप्रकाश, आचार्यविश्वेश्वर,प्रकाशक - ज्ञानमंडल ।

MA Sanskrit

Semester- 1

Paper - III

Course Code- SAN-CC3

Core Course

Title of Course– भारतीय दर्शन का सामान्य अध्ययन एवं भारतीय तर्कशास्त्र

क्रेडिट– 04

## उद्देश्य -

- भारतीय दर्शन की समझ विकसित कराना।
- सांख्य एवं योग के मुख्य सिद्धांतों से अवगतकराना ।
- न्याय एवं वैशेषिक के मुख्य सिद्धांतों के विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।
- पूर्वमीमांसा एवं अद्वैत वेदान्त के मुख्य सिद्धांतों के अवबोधन की सामर्थ्य विकसित कराना।

## संगति -

- भारतीय दर्शन एवं तर्कशास्त्र के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

## फलितांश -

- भारतीय दर्शन की समझ विकसित हो सकेगी।
- सांख्य एवं योग के मुख्य सिद्धांतों से अवगत हो सकेंगे ।
- न्याय एवं वैशेषिक के मुख्य सिद्धांतों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- पूर्वमीमांसा एवं अद्वैत वेदान्त के मुख्य सिद्धांतों से परिचित हो सकेंगे तथा इन सिद्धान्तों की गहराई समझ सकेंगे।

इकाई -1 जैन, बौद्ध, सांख्य एवं योग का सामान्य अध्ययन

1.1-जैन एवं बौद्ध दर्शन का सामान्य अध्ययन

1.2-चार्वाक मुख्य विचार, प्रमाण विचार, ईश्वर, आत्मा, मोक्ष

1.3-सांख्य एवं योग

(दुःखत्रयवाद, प्रमाण, सत्कार्यवाद,प्रकृति,पुरुष, सृष्टिप्रक्रिया, सूक्ष्म-शरीर,बन्ध एवं मोक्ष, चित्तवृत्ति, अष्टांगयोग, कैवल्य, समाधि)

इकाई -2 न्याय एवं वैशेषिक सामान्य अध्ययन क्रेडिट - 01

(पदार्थविभाजन, प्रमाण विचार, सृष्टि, जीव और ईश्वर विचार, मोक्ष)

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -3 | पूर्वमीमांसा एवं अद्वैत वेदान्त | क्रेडिट– 01 |
| | 3.1वेदवाक्य के भेद, विधिस्वरूप और प्रकार, भावना प्रकार, अपूर्व। | |
| | 3.2प्रस्थानत्रय, ब्रह्म विचार, मोक्ष, मोक्ष उपाय, | |
| | 3.3प्रसिद्धवेदांत संप्रदाय | |
| इकाई -4 | ग्रन्थाध्ययन | क्रेडिट– 01 |
| | तर्कसंग्रह (मूलभाग सम्पूर्ण) | |

## परामृष्टग्रन्थसूची –


- भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण, संगमलालपाण्डेय, सेन्ट्रलपब्लिशिंगहाउसइलाहाबाद
- भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन, चन्द्रधरशर्मा, मोतीलालबनारसीदासपब्लिशिंगहाउस दिल्ली
- तर्कसंग्रहः, आचार्यकेदारनाथत्रिपाठी, मोतीलालबनारसीदास,वाराणसी

# MA Sanskrit

## Semester- 1

## Paper - IV

## Course Code- SAN-CC4

## Core Course

Title of Course - भारतीय संस्कृति, इतिहास एवं पुराण एवं धर्मशास्त्र क्रेडिट - 04

### उद्देश्य -

- पुरुषार्थचतुष्टय से परिचित कराना ।
- रामायण कालीन समाज से परिचित कराना तथा उनके आदर्शों की समझ विकसित करना।
- महाभारत कालीन समाज से परिचित कराना तथा उनके विविध आख्यानों के माध्यम से जीवनमूल्यों का अवबोध कराना
- पुराण एवं उपपुराण से परिचित करानातथा पुराणों में निहित सृष्टिविज्ञान सम्बन्धी विचारों से अवगत कराना।

### संगति –

- रामायण-महाभारत-पुराणादि के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश -

- पुरुषार्थचतुष्टय से परिचित हो सकेंगे ।
- रामायण कालीन समाज से परिचित हो सकेंगे तथा उनके आदर्शों से प्रेरित हो सकेंगे।
- महाभारत कालीन समाज से परिचित हो सकेंगे, साथ ही महाभारतोक्त जीवनमूल्यों से प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे।
- पुराण एवं उपपुराण से परिचित हो सकेंगे तथा पुराणों के सृष्टिविषयक मत को जान सकेंगे।

इकाई -1 भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ – क्रेडिट– 01

पुरुषार्थचतुष्टय, वर्ण एवं आश्रमव्यवस्था तथा षोडशसंस्कार

इकाई -2 सामान्य परिचयः क्रेडिट– 01

2.1 रामायण - विषयवस्तु, काल, रामायणकालीन समाज, परवर्तीग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत,साहित्यिकमहत्त्व,

2.2 रामायण में आख्यान – 1 वशिष्ठभरतसम्वाद, 2 सीताअनसूया आख्यान, 3 शरभङ्ग ऋषि का आख्यान, 4 हनुमानरामसंवाद।

इकाई -3 सामान्य परिचयः क्रेडिट - 01

महाभारत -विषयवस्तु, काल महाभारतकालीन समाज, परवर्तीग्रन्थों के लिए उपजीव्य, साहित्यिकमहत्त्व,महाभारत के कतिपय आख्यान -6 विदुर- धृतराष्ट्र आख्यान (उद्योगपर्व), 7 युधिष्ठिरभीष्मसंवाद (शान्तिपर्व) ,विदुर नीति।

इकाई -4 सामान्य परिचयः क्रेडिट– 01

पुराण - पुराण की परिभाषा, महापुराणएवं उपपुराण के लक्षण, पौराणिक सृष्टि-विज्ञान, ययाति काआख्यान

## परामृष्टग्रन्थसूची –


- संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमाशंकरशर्माऋषि,चौखम्बाभारती अकादमी वाराणसी
- श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण,गीताप्रेस, गोरखपुर
- महाभारत,गीताप्रेस,गोरखपुर
- श्रीमद्भागवत-महापुराण,गीताप्रेस,गोरखपुर

MA Sanskrit

Semester- 1

Paper - V

Course Code- SAN-CC5

Core Course

Title of Course - संस्कृत व्याकरण

क्रेडिट - 04

## उद्देश्य -

- पाणिनीयअष्टाध्यायी से परिचित कराना ।
- अनभिहितेअधिकार के सूत्रों के अर्थनिष्पादन की सामर्थ्य विकसित करना, उनके उदाहरणों के माध्यम से सप्तविभक्तिप्रयोग की सामर्थ्य विकसित कराना।
- समासअधिकार के सूत्रों के अर्थनिष्पादन की सामर्थ्य विकसित करते हुए समस्त प्रयोगों के विश्लेषण तथा समास करने की सामर्थ्य का विकास कराना।
- कारकेअधिकार के अन्तर्गत सूत्रों के माध्यम से कारक विषयक समझ विकसित कराना।

## संगति -

- अष्टाध्यायी एवं लघुसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

## फलितांश -

- पाणिनीयअष्टाध्यायी से परिचित हो सकेंगे ।
- अनभिहितेअधिकार के अर्थनिष्पादन में समर्थ हो सकेंगे तथा सप्तविभक्तिप्रयोग में समर्थ हो सकेंगे।
- समासअधिकार के सूत्रों के अर्थनिष्पादन में समर्थ होते हुए समस्त पदों के विश्लेषण तथा समास करने में समर्थ हो सकेंगे।
- कारकेअधिकार के अन्तर्गत सूत्रों के माध्यम से कारक विषयक प्रयोग करने में समर्थ हो सकेंगे।

इकाई -1 पाणिनीयअष्टाध्यायी – क्रेडिट - 01

1.1 कारकेअधिकार (कण्ठपाठ, सूत्र अर्थ एवं उदाहरण)

1.2 कारकप्रकरण (वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीफक्किकाभाग के विना)

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -2 | पाणिनीयअष्टाध्यायी<br>अनभिहितेअधिकार (कण्ठपाठ, सूत्रार्थ एवं उदाहरण) | क्रेडिट - 01 |
| इकाई–3 | पाणिनीयअष्टाध्यायी - समासअधिकार (कण्ठपाठ,सूत्र अर्थ एवं उदाहरण) | क्रेडिट– 01 |
| इकाई–4 | समासप्रकरण (लघुसिद्धान्तकौमुदी) | क्रेडिट - 01 |

## परामृष्टग्रन्थसूची –


- अष्टाध्यायी-भाष्य-प्रथमावृत्ति,पण्डितब्रह्मदत्तजिज्ञासु, प्रकाशक-ऋषि मिशन
- अष्टाध्यायी,श्रीगोपालदत्तपाण्डेयः,चौखम्बसुरभारती प्रकाशन।
- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी,श्रीगोपालदत्तपाण्डेयः,चौखम्बासुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- लघुसिद्धान्तकौमुदी, गीताप्रेस,गोरखपुर

MA Sanskrit

Semester- 1

Course Code- SAN-ECA 1

Core Course

Course Name – Extra Curricular Activities (ECA - 1) क्रेडिट् - 2

# MA Sanskrit
## Semester-II
## Paper - I
## Course Code SAN-CC6
## Core Course

Title of Course –व्याकरण एवं भाषा विज्ञान क्रेडिट - 04

### उद्देश्य -

- संस्कृत व्याकरणकी परम्परा से सामान्यरूप से परिचय कराना ।
- भाषाविज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना ।
- वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड) के माध्यम से व्याकरणदर्शन एवं उसके आधारभूत सिद्धान्तों की पृष्ठभूमि तैयार कराना।
- महाभाष्य (पस्पशाह्निक) के माध्यम से व्याकरण अध्ययन के प्रयोजन, पद्धाति एवं स्वरूप से परिचित कराना।

### संगति -

- संस्कृत व्याकरण और भाषाविज्ञान के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश -

- संस्कृत व्याकरणकी परम्परा से परिचित हो सकेंगे।
- भाषाविज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों से परिचित हो सकेंगे।
- वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड) के माध्यम से व्याकरणदर्शन एवं उसके आधारभूत सिद्धान्तों को समझने की पृष्ठभूमि तैयार हो सकेगी
- महाभाष्य (पस्पशाह्निक) के माध्यम से व्याकरण अध्ययन के प्रयोजन एवं उसके स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।

इकाई -1 व्याकरण की आचार्य परम्परा का परिचय क्रेडिट– 01

पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि, भर्तृहरि, वामनजयादित्य, भट्टोजिदीक्षित, नागेशभट्टजैनेन्द्र, कैस्यट, शाकटायन, हेमचन्द्रसूरि, सारस्वतव्याकरणकार।

इकाई -2 भाषाविज्ञान क्रेडिट– 01

भाषा की परिभाषा, भाषा का वर्गीकरण(आकृतिमूलक एवं पारिवारिक), ध्वनियों कावर्गीकरण, स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर, स्वर (संस्कृत ध्वनियों के विशेष संदर्भ में), मानवीयध्वनियंत्र, ध्वनि परिवर्तन के कारण, ध्वनि नियम(ग्रिम, ग्रासमान, वर्नर), अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण, वाक्य का

लक्षण व भेद, भारोपीय परिवार कासामान्य परिचय, वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर, भाषा तथा वाक् मेंअन्तर, भाषा तथा बोली में अन्तर।

**इकाई -3** वाक्यपदीयम्(ब्रह्मकाण्ड) **क्रेडिट– 01**

**इकाई -4** महाभाष्य(पस्पशाह्निक) **क्रेडिट - 01**

## परामृष्टग्रन्थसूची –


- संस्कृत-शास्त्रों का इतिहास, आचार्यबलदेवउपाध्याय,प्रकाशक-शारदामन्दिरवाराणसी
- भाषाविज्ञान एवं भाषा शास्त्र, कपिलदेवद्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
- वाक्यपदीयम्, पण्डितश्रीरघुनाथशर्मा, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
- व्याकरणमहाभाष्यम्, डॉ.हरिनारायणतिवारी, चौखम्बाविद्याभवन

MA Sanskrit

Semester-II

## Paper - II

## Course Code SAN-CC7

## Core Course

Title of Course - पाणिनीय शिक्षा एवं निरूक्त क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- पाणिनीय शिक्षा के माध्यम से वर्णोच्चारण के स्वरूप एवं पद्धति से अवगत कराना
- निरुक्त के माध्यम से पदों के स्वरूप एवं उनके प्रयोगों से परिचित कराना।
- वैदिक शब्दों केनिर्वचनएवं व्युत्पत्ति के सिद्धान्त से परिचित कराना ।
- निरुक्त के दैवत काण्ड के माध्यम से वैदिक देवताओं के स्वरूप एवं वेद में उनके महत्व से परिचित कराना।

### फलितांश-

- पाणिनीय शिक्षा के माध्यम से वर्णोच्चारण के स्वरूप व पद्धति को समझ सकेंगे।
- निरुक्तके माध्यम से पदों के स्वरूप एवं प्रयोग को समझ सकेंगे।
- वैदिक शब्दों के निर्वचनएवं व्युत्पत्ति के सिद्धान्तको जानने की समझ विकसित हो सकेगी।
- निरुक्त के दैवत काण्ड के माध्यम से वैदिक देवताओं के स्वरूप एवं वेद में उनके महत्व से अवगत हो सकेंगे।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | पाणिनीय शिक्षा | क्रेडिट– 01 |
| इकाई -2 | चार पद – नाम विचार, आख्यात विचार, उपसर्गों का अर्थ, निपात की कोटियाँ | क्रेडिट - 01 |
| इकाई -3 | निरूक्त अध्ययन के प्रयोजन, निर्वचन के सिद्धान्त | क्रेडिट– 01 |
| इकाई -4 | निम्नलिखितशब्दों की व्युत्पत्ति<br>आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक्, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु।<br>4.1 निरूक्त (अध्याय 7 दैवतकाण्ड) | क्रेडिट– 01 |

### परामृष्टग्रन्थसूची-

- पाणिनीयशिक्षा,डॉ.कमलाप्रसादपाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
- निरुक्त (कश्यपप्रजापतिकृतनिघण्टुभाष्यरूपम्), पं.मुकुन्दझाबख्शी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली ।
- निरुक्त, प्रो. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, 2001

MA Sanskrit

Semester-II

## Paper - III

## Course Code SAN-CC8

## Core Course

Title of Course – भारतीय दर्शन का विशिष्ट अध्ययन एवं पाश्चात्य दर्शन क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- वेदान्त दर्शन से सम्बन्धित मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना।
- वेदान्त दर्शन के प्रकरणग्रन्थवेदान्तसारमें प्रतिपादित आधारभूत सिद्धान्तों की समझ विकसित कराना।
- न्याय दर्शन के मूलसिद्धान्तों की समझ विकसित कराना।
- पाश्चात्त्य दर्शन का प्रारम्भिक परिचय प्रदान करना।

### संगति -

- भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्त्य दर्शन के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश-

- वेदान्त दर्शन से सम्बन्धित मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित हो सकेंगे।
- वेदान्त दर्शन के प्रकरणग्रन्थवेदान्तसारमें प्रतिपादित आधारभूत सिद्धान्तों की समझ विकसित हो सकेगी ।
- न्याय दर्शन के मूलसिद्धान्तों की समझ विकसित हो सकेगी।
- पाश्चात्त्य दर्शन के सिद्धान्त से परिचित हो सकेंगे ।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | वेदान्तसार- अनुबन्धचतुष्टय,अज्ञान की शक्तियां, अध्यारोप और अपवाद, पंचीकरण,लिंगशरीरोत्पत्ति, विवर्त, महावाक्य, जीवनमुक्ति | क्रेडिट– 01 |
| इकाई -2 | तर्कभाषा- प्रारम्भ से प्रत्यक्ष समाप्तिपर्यन्त | क्रेडिट– 01 |
| इकाई -3 | तर्कभाषा- अनुमान, उपमान, शब्द प्रमाण, प्रामाण्यवाद एवं प्रमेय | क्रेडिट– 01 |

इकाई -4 पाश्चात्त्य दर्शन का सामान्य अध्ययन क्रेडिट– 01

प्रमुख ग्रीक दार्शनिक ( सुकरात, अरस्तू एवं प्लेटो), प्रमुख बुद्धिवादी दार्शनिक (देकार्त, स्पिनोजा, लाइबिनित्स) प्रमुख अनुभववादी दार्शनिक ( जॉनलाक, बर्कले एवं ह्यूम) एवं इमैनुअलकान्ट।

## परामृष्टग्रन्थसूची-


- वेदान्तसार, डॉ.आद्याप्रसादमिश्र,अक्षयवटप्रकाशन,इलाहाबाद
- तर्कभाषा, बदरीनाथशुक्ल, मोतीलालबनारसीदास, वाराणसी
-पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास: यामसीह
- पाश्चात्य दर्शन : सी डी शर्मा
- पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकास : हरी शंकर उपाध्याय
- पाश्चात्य दर्शन का इतिहास: फ्रैंक थिली

MA Sanskrit

Semester-II

## Paper - IV

## Course Code SAN-CC9

## Core Course

Title of Course – संस्कृत काव्य क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- भट्टिकाव्य के माध्यम से काव्य की विशिष्ट शैली से परिचित कराना।
- भट्टिकाव्यके माध्यम से व्याकरण के प्रयोगों का अवबोधन कराना।

### संगति -

- काव्य एवं व्याकरण के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश-

- भट्टिकाव्य के माध्यम से काव्य की विशिष्ट शैली से परिचित हो सकेंगे।
- भट्टिकाव्यके माध्यम से व्याकरण के विभिन्न प्रयोगों का अवबोध हो सकेगा ।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | भट्टिकाव्य परिचय एवं भट्टिकाव्य(प्रथम सर्ग, 1 से 15 ) | क्रेडिट– 01 |
| इकाई -2 | भट्टिकाव्य (प्रथम सर्ग, 16 से 27 श्लोक एवं द्वितीयसर्ग 1 से 10 श्लोक) | क्रेडिट - 01 |
| इकाई -3 | भट्टिकाव्य (द्वितीयसर्ग, 11 से 30 श्लोक) | क्रेडिट - 01 |
| इकाई -4 | भट्टिकाव्य (द्वितीयसर्ग, 31 से 55 श्लोक) | क्रेडिट - 01 |

### परामृष्टग्रन्थसूची –

- भट्टिकाव्यम्,चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी

MA Sanskrit

Semester-II

Paper - V

Course Code SAN-CC10

Core Course

Title of Course –पाण्डुलिपि, पुरालिपि एवं अभिलेख क्रेडिट - 04

## उद्देश्य-

- पाण्डुलिपि विज्ञान से परिचित कराना ।
- लिपि के उद्भव एवं विकास से परिचित कराते हुए ब्राह्मी लिपि में पढने की सामर्थ्य विकसित करना।
- अभिलेख शास्त्र से परिचित कराना ।
- प्रमुख हस्तलेखोंको पढ़कर उनके ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व से परिचित कराना।

## संगति -

- लिपि एवं अभिलेख के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

## फलितांश-

- पाण्डुलिपि विज्ञान से परिचित हो सकेंगे ।
- लिपि के उद्भव एवं विकास से परिचित होने के साथ ब्राह्मी लिपि में पढ़सकेंगे।
- अभिलेख शास्त्र से परिचित हो सकेंगे ।
- प्रमुख हस्तलेखोंको पढ़ सकेंगे तथा उनके ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व को समझा सकेंगे ।

इकाई -1 पाण्डुलिपि विज्ञान परिचय क्रेडिट – 01

परिभाषा,महत्त्व, पाण्डुलिपि विज्ञान के सहायक शास्त्र,पाण्डुलिपि के विविध प्रकार, लेखक केगुण, पाण्डुलिपिलेख·

इकाई –2 लिपि का उद्भव एवं विकास क्रेडिट – 01

ब्राह्मी-शारदा एवं ग्रन्थलिपियों का उद्भव एवं विकास, ब्राह्मी लिपि अभ्यास

इकाई -3 अभिलेख शास्त्र परिचय क्रेडिट – 01

परिभाषा एवं महत्त्व, अशोक के अभिलेख - प्रमुख शिलालेख, प्रमुख स्तम्भलेख, मौर्योत्तरकालीनअभिलेख- कनिष्क पुलकेशिन्द्वितीय का ऐहोलशिलालेख

इकाई -4 प्रमुख हस्तलेख एवं समीक्षात्मकसंस्करणों का परिचय क्रेडिट – 01

बखशालीहस्तलेख, गिलगितपाण्डुलिपियाँ, बोवरहस्तलेख, भूर्जहस्तलेख, आदिपर्व का हस्तलेख, गॉडफ्रेहस्तलेख, होरयूजीहस्तलेख, रामायण-महाभारत एवं अभिज्ञानशाकुन्तलम् के समीक्षात्मकसंस्करणों का परिचय

## परामृष्टग्रन्थसूची


1. प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख, डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त, विश्वविद्यालय प्रकाशन।
2. भारतीय पुरालेखों का अध्यन, डॉ. शिवस्वरूप सहाय, प्रका.- मोतीलाल बनारसीदास।
3. Indian Epigraphy by D. C. Sircar, Motilal Banarasidas।
4. भारतीय पुरालिपि विद्या, दिनेश चन्द्र सरकार, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।
5. पाण्डुलिपिविज्ञान, डॉ. सत्येन्द्र।
6. शोधप्रविधि एवं पाण्डुलिपिविज्ञान, प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, प्रयागराज।
7. The Fundamentals of Manuscriptology by P. Visalakhya।
8. भारतीय लिपियों की कहानी, गुणाकर मूले, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. Introduction to Manuscriptology by R. S. Shivaganesh Murty


Internship (प्रशिक्षुतासेवा) क्रेडिट - 02

# MA Sanskrit

## Semester-III Group – A

## Paper - I

## Course Code SAN-DSCC1A

Title of Course – ऋग्वेदसंहिता एवं निरुक्त क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- वेदों की परम्परा से परिचित होते हुए वैदिक ऋषि, देवता के बारे में अवबोध कराना।
- ऋग्वेद के कतिपय सूक्तों को भाष्य सहित पढकर वेद की भाष्यपरम्परा की समझ विकसित कराना
- निरुक्तके माध्यम से वैदिक शब्दों के निर्वचन एवं व्युत्पत्ति की प्रक्रिया से अवगत कराना।
- निरुक्त के कतिपय अध्यायों के माध्यम से पदों के स्वरूप एवं उपसर्गादि के विशेष अर्थों से अवगत कराना ।

### संगति -

- ऋग्वेद और निरुक्त के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश-

- वेद की परम्परा से परिचित होने के साथ-साथ वैदिक ऋषि, देवता विषयक समझ विकसित हो सकेगी
- ऋग्वेदकी भाष्यपरम्परा एवं शैली की समझ हो सकेगी।
- निरुक्तके माध्यम से वैदिक शब्दों के विशिष्ट प्रयोगों की समझ विकसित होगी।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | ऋग्वेद -1.35,1.85,2.33 | क्रेडिट – 01 |
| इकाई -2 | ऋग्वेद - 4. 51, 7.61, 7.86, 10.166 | क्रेडिट - 01 |
| इकाई -3 | निरुक्त प्रथम अध्याय 1-3 पाद | क्रेडिट – 01 |
| इकाई -4 | निरुक्त प्रथम अध्याय 4-6 पाद | क्रेडिट - 01 |

### परामृष्टग्रन्थसूची -

- ऋग्वेदसंहिता (सायणभाष्य सहित)

- निरुक्त, प्रो. उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, 2001
- निरुक्त (कश्यपप्रजापतिकृतनिघण्टुभाष्यरूपम्), पं.मुकुन्दझाबख्शी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली ।

# MA Sanskrit

## Semester-III Group – A

## Paper - II

## Course Code- SAN-DSCC2A

Title of Course – यजुर्वेद एवं अथर्ववेदसंहिता क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- यजुर्वेदकी परम्परा से अवगत होते हुए श्रौतयज्ञ का परिचयात्मक ज्ञान कराना।
- दर्श-पौर्णमास की श्रौत परम्परा से परिचित कराना।
- अथर्ववेदके वैशिष्ट्य से परिचित कराना।

### संगति-

- यजुर्वेद और अथर्ववेद के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश-

- यजुर्वेदसंहिता के माध्यम से श्रौतयागपरक भाष्यपरम्परा से परिचित हो सकेंगे।
- अथर्ववेद के वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | अथर्ववेद - 3.4, 12, 17; IV 16 | क्रेडिट – 01 |
| इकाई -2 | अथर्ववेद -11.4 (1-10),1I.1 (1-10) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई -3 | वाजसनेयिसंहिता – अध्याय–1 | क्रेडिट – 01 |
| इकाई -4 | वाजसनेयिसंहिता – अध्याय–2 | क्रेडिट - 01 |

परामृष्टग्रन्थसूची –

- अथर्ववेद (सायणभाष्य सहित)
- शुक्ल-यजुर्वेद-संहिता (महीधरभाष्य सहित)
-

# MA Sanskrit

## Semester-III Group – A

## Paper - III

## Course Code- SAN-DSCC3A

Title of Course - ब्राह्मण ग्रन्थ क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- ब्राह्मणग्रन्थोंके अध्ययन के माध्यम से वेद के मन्त्रभाग का अर्थावबोध कराना।
- शतपथब्राह्मणके माध्यम से वेदार्थ के विभिन्न स्वरूपों से परिचित कराना।

### संगति-

- वेद और ब्राह्मण के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश-

- ब्राह्मणग्रन्थों से परिचित हो सकेंगे ।
- शतपथब्राह्मणके माध्यम से वेद की विधि, आख्यान एवं यज्ञ परम्परा की समझ विकसित हो सकेगी।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | शतपथब्राह्मण (माध्यन्दिनशाखा)1.1.1-2 | क्रेडिट - 01 |
| इकाई -2 | शतपथब्राह्मण (माध्यन्दिनशाखा) 1.1.3-4 | क्रेडिट - 01 |
| इकाई -3 | शतपथब्राह्मण (माध्यन्दिनशाखा) 1.2.1-2 | क्रेडिट – 01 |
| इकाई -4 | शतपथब्राह्मण (माध्यन्दिनशाखा) 1.2.3-4 | क्रेडिट - 01 |

### परामृष्टग्रन्थसूची –

- श्रीमद्वाजसनेयिमाध्यन्दिनशतपथब्राह्मण (सायणभाष्य सहित)

# MA Sanskrit

## Semester-III,

## Group- B व्याकरण

## Paper - I

## Course Code- SAN- DSCC1B

Title of Course –व्याकरण शास्त्र की परम्परा क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- पाणिनिपूर्व व्याकरणपरम्परा एवं शिक्षा, प्रातिशाख्य से परिचित कराना।
- मुनित्रय एवं उनके पश्चाद्वर्ती व्याकरण परम्परा से परिचित कराना।
- व्याकरण दर्शन की परम्परा की समझ विकसित करना।

### संगति-

- प्रातिशाख्यआदिग्रन्थ और पाणिनीयव्याकरण के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश-

- पाणिनिपूर्व व्याकरणपरम्परा एवं शिक्षा, प्रातिशाख्यादि की परम्परा से परिचित हो सकेंगे।
- व्याकरण के मुनित्रय एवं उनके पश्चाद्वर्ती व्याकरण परम्परा से परिचित हो सकेंगे।
- व्याकरण दर्शन की परम्परा की समझ विकसित हो सकेगी।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | मुनित्रय के पूर्व, प्रातिशाख्य, शिक्षा, निरुक्त, शाकटायन | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-2 | पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-3 | काशिका, पदमञ्जरी, न्यास एवं अन्य वृत्तिग्रन्थ<br>व्याकरण दर्शन का विकास | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-4 | पाणिनीय व्याकरण परम्परा<br>4.1 पाणिनीयव्याकरणपरम्परापतञ्जलि एवं भर्तृहरि के व्याकरण दर्शन के सिद्धान्त<br>4.2-भट्टोजिदीक्षित, कौण्डभट्ट एवं नागेशभट्ट | क्रेडिट - 01 |

परामृष्टग्रन्थसूची -

- संस्कृत वाङ्मय का बृहद्इतिहास(भाग - 15), आचार्यबलदेवउपाध्याय, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थानलखनऊ
- संस्कृत शास्त्रों का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

# MA Sanskrit

## Semester-III,

## Group- B व्याकरण

## Paper - II

## Course Code- SAN-DSCC2B

Title of Course – प्राचीन पाणिनीयव्याकरण क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- चतुर्दश सूत्रों के विषय में महाभाष्य के आधार पर विशेष जानकारी देना।
- महाभाष्य के द्वितीयआह्निकका विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- अष्टाध्यायीकाशिकावृत्ति से परिचित कराना ।
- अष्टाध्यायीकाशिकावृत्ति के प्रथम अध्याय का विशेष अध्ययन कराना।

### संगति-

- महाभाष्य और अष्टाध्यायीकाशिकावृत्ति के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश-

- पाणिनीय व्याकरण के चतुर्दश सूत्रों के वैशिष्ट्य को जान सकेंगे।
- महाभाष्य के द्वितीयआह्निकका विश्लेषण कर सकेंगे।
- अष्टाध्यायीकाशिकावृत्ति से परिचित हो सकेंगे ।
- अष्टाध्यायीकाशिकावृत्ति के प्रथम अध्याय की गम्भीर समझ विकसित हो सकेगी।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | महाभाष्यद्वितीयआह्निक | क्रेडिट - 01 |
| इकाई-2 | अष्टाध्यायीकाशिकावृत्ति, प्रथम अध्याय, प्रथम पाद | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-3 | अष्टाध्यायीकाशिकावृत्ति, प्रथम अध्याय, द्वितीयपाद | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-4 | पाणिनीय अष्टाध्यायी<br>4.1-कर्मण्यण् (3.2.1) से गमश्च(3.2.47) तक<br>4.2-अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वानन्तेषु डः (3.2.48) से बहुलं छन्दसि(3.2.88) तक | क्रेडिट - 01 |

परामृष्टग्रन्थसूची-


- व्याकरणमहाभाष्यम्, चारुदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी
- काशिकावृत्ति,पं.ईश्वरचन्द्र, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
- अष्टाध्यायीभाष्यप्रथमावृत्तिः, पं. ब्रह्मदत्तजिज्ञासु,रामलालकपूरट्रस्ट

# MA Sanskrit

## Semester-III,

## Group- B व्याकरण

## Paper - III

## Course Code- SAN-DSCC3B

Title of Course – नव्यपाणिनीयव्याकरण क्रेडिट - 04

**उद्देश्य-**

- व्याकरण शास्त्र के समासविषयक सूत्रों, उदाहरणो एवं उसकी प्रक्रिया का गम्भीर ज्ञान कराना।
- समास विश्लेषण एवं समास करने की विशिष्ट सामर्थ्य का विकास करना।
- तद्धित प्रत्यय के विषय में विशेष समझ विकसित करना।
- तद्धित प्रत्यय सम्बन्धी विशेष प्रकरणों से परिचित कराना।

**संगति-**

- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी और पाणिनीयअष्टाध्यायी के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

**फलितांश-**

- समास की प्रक्रिया करने एवं समस्त पदों का विश्लेषण करने में समर्थ हो सकेंगे।
- तद्धित प्रत्ययों को पहचान सकेंगे तथा प्रमुख तद्धित प्रत्ययान्त रूपों को बना सकेंगे।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई– 1 | वैयाकरणसिद्धान्त-कौमुदी (अव्ययीभावसमासप्रकरण) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-2 | वैयाकरणसिद्धान्त-कौमुदी (तत्पुरुषसमासप्रकरण) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई– 3 | वैयाकरणसिद्धान्त-कौमुदी (बहुव्रीहि एवं द्वन्द्वसमासप्रकरण) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई – 4 | वैयाकरणसिद्धान्त-कौमुदी<br>4.1तद्धिताधिकार एवं अपत्याधिकार<br>4.2सिद्धान्त-कौमुदी (मत्वर्थीयप्रकरण)<br>तदस्येति 5.2.94- अहंशुभयोर्युस् – 5.2.140 | क्रेडिट – 01 |

**परामृष्टग्रन्थसूची-**

- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, डॉ.शिवप्रसादशर्मा, चौखम्बाविद्याभवनवाराणसी

- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी 1,2 भाग (बालमनोरमाव्याख्यासमलङ्कृता) , श्रीगोपालदत्तपाण्डेय, चौखम्बासुरभारती प्रकाशन ।

# MA Sanskrit

## Semester - III

## Group – C दर्शन

## Paper - I

## Course Code- SAN-DSCC1C

Title of Course – न्यायवैशेषिक क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- न्याय शास्त्र के प्रमुख सिद्धान्तों की गम्भीर समझ विकसित करना।
- प्रत्यक्ष एवं अनुमान से सम्बन्धित न्यायसिद्धान्तों का गम्भीर अवबोध कराना।

### संगति-

- कारिकावली और न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश-

- न्याय शास्त्र के प्रमुख सिद्धान्तों की गम्भीर समझ विकसित हो सकेगी।
- प्रत्यक्ष एवं अनुमान विषयक न्यायसिद्धान्तों की गम्भीर समझ विकसित हो सकेगी।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली<br>1.1-प्रारम्भ से 16 कारिकापर्यन्त<br>1.2- 17 से 32 कारिकापर्यन्त | क्रेडिट - 01 |
| इकाई-2 | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, (33 से 48 कारिकापर्यन्त) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-3 | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, (49 से प्रत्यक्ष खण्डसमाप्तिपर्यन्त) | क्रेडिट - 01 |
| इकाई-4 | न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानकाण्ड)<br>व्याप्ति, पूर्वपक्षलक्षण, सिद्धांत लक्षण, अनुमान प्रकार, हेत्वाभास | क्रेडिट – 01 |

### परामृष्टग्रन्थसूची-

- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, डॉ. गजाननशास्त्रीमुसलगाँवकर, चौखम्बासुरभारती प्रकाशन

# MA Sanskrit

## Semester - III

## Group – C दर्शन

## Paper - II

## Course Code -SAN-DSCC2C

Title of Course - सांख्ययोग क्रेडिट - 04

**उद्देश्य-**

- सांख्यदर्शनके सिद्धान्तों की गम्भीर समझ विकसित करना।
- योगदर्शनके सिद्धान्तों का गम्भीर अवबोध कराना।
- सांख्यतत्त्वकौमुदीके विशिष्ट अध्ययन से साङ्ख्यसिद्धान्तों के विश्लेषण की सामर्थ्य विकसित करना।
- योगसूत्रकैवल्यपादके माध्यम से योगसिद्धान्तों का गम्भीर अवगाहन कराना।

**संगति-**

- सांख्यदर्शन और योगदर्शन के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

**फलितांश-**

- सांख्यदर्शनके गम्भीर सिद्धान्तों का सूक्ष्म विश्लेषण कर सकेंगे।
- योगदर्शनके गम्भीर सिद्धान्तों का सूक्ष्म विश्लेषण कर सकेंगे।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | सांख्यतत्त्वकौमुदी, (प्रारम्भ से 13 कारिकापर्यन्त) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-2 | सांख्यतत्त्वकौमुदी (14 से 40 कारिकापर्यन्त) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-3 | सांख्यतत्त्वकौमुदी(41 से ग्रन्थसमाप्तिपर्यन्त) | क्रेडिट - 01 |
| इकाई-4 | योगसूत्र (कैवल्यपादव्यासभाष्य सहित)<br>4.1 सूत्र 1 से 17 पर्यन्त<br>4.2 18 से 34 पर्यन्त | क्रेडिट – 01 |

**परामृष्टग्रन्थसूची-**

- सांख्यतत्त्वकौमुदी, पं.ज्वालाप्रसादगौड़, चौखम्बासुरभारती प्रकाशन वाराणसी

MA Sanskrit

Semester - III

Group – C दर्शन

Paper - III

Course Code -SAN-DSCC3C

Title of Course –वेदान्त दर्शन एवं चार्वाक, बौद्ध, जैन दर्शन क्रेडिट - 04

## उद्देश्य-

- वैदिक दर्शन एवं अवैदिक दर्शन का परिचय कराते हुए उनके प्रमुख सिद्धान्तों से परिचित कराना।
- सर्वदर्शन संग्रह के माध्यम से चार्वाक, जैन एवं बौद्ध दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का विशिष्ट अध्ययन कराना।
-

## संगति-

- वैदिक और अवैदिक दर्शन के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

## फलितांश-

- वैदिक दर्शन एवं अवैदिक दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित हो सकेंगे।
- चार्वाक, जैन एवं बौद्ध दर्शन की विशेष समझ विकसित हो सकेगी।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | सर्वदर्शनसंग्रह, (चार्वाक दर्शन) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-2 | सर्वदर्शनसंग्रह (जैन दर्शन) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-3 | सर्वदर्शनसंग्रह (बौद्ध दर्शन) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-4 | वेदान्त परिभाषा (विषय एवं प्रयोजनपरिच्छेद ) | क्रेडिट – 01 |

## परामृष्टग्रन्थसूची


- सर्वदर्शनसंग्रह-माधवाचार्य, मदनमोहनअग्रवाल, चौखम्बासुरभारती प्रकाशन, दिल्ली
- वेदान्तपरिभाषा, पं. गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

# MA Sanskrit

## Semester - III

## Group – D -साहित्य

## Paper I

## Course Code- SAN-DSCC1D

Title of Course – गद्य एवं पद्य क्रेडिट - 04

**उद्देश्य-**

- प्रौढ संस्कृत गद्यशैली से परिचित कराना।
- कादम्बरीएवं उसकी शैली से परिचित कराना।
- शुकनासोपदेश एवं विन्ध्याटवीवर्णन का विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- प्रौढ संस्कृत काव्यशैली से परिचित कराना।
- नैषधीयचरितम् से परिचित कराना ।
- नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग का विशिष्ट अध्ययन कराना ।

**संगति-**

- प्रौढगद्यसाहित्य एवं प्रौढसंस्कृतपद्यकाव्य के मध्य तारतम्यता का अध्ययन।

**फलितांश-**

- प्रौढ संस्कृत गद्यशैली से परिचित हो सकेंगे।
- कादम्बरीएवं उसकी शैली से को समझ सकेंगे।
- शुकनासोपदेश एवं विन्ध्याटवीवर्णनसे अवगत हो सकेंगे।
- प्रौढ संस्कृत काव्यशैली से परिचित हो सकेंगे।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | (कादम्बरी) शुकनासोपदेश एवं विन्ध्याटवीवर्णन | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-2 | नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग)1 – 50 श्लोक | क्रेडिट - 01 |
| इकाई-3 | नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग)51-100 श्लोक | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-4 | नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग)101 – 145 श्लोक | क्रेडिट - 01 |

**परामृष्टग्रन्थसूची –**


- नैषधीयचरितम्, तारिणीशझा, रामनारायणलाल विजय कुमार, इलाहाबाद (प्रकाशन)
- कादम्बरी, शेषराज शर्मा रेग्मी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वार

MA Sanskrit

Semester - III

Group – D -साहित्य

Paper - II

Course Code -SAN-DSCC2D

Title of Course – नाटक क्रेडिट - 04

## उद्देश्य-

- संस्कृतरूपकों के नाटक एवं प्रकरण भेद का विशेष परिचय कराना।
- मृच्छकटिकम्के माध्यम से संस्कृतरूपक के भेद- 'प्रकरण' का विशेष अध्ययन कराना।
- मृच्छकटिकम् के प्रथम एवं द्वितीयअङ्क का विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- उत्तररामचरितम्का विशेष परिचय देना।
- उत्तररामचरितम् के प्रथम,द्वितीय एवं तृतीयअङ्क का विशिष्ट अध्ययन कराना ।

## संगति-

- नाटक एवं प्रकरण के मध्यकाव्यशास्त्रीयतत्त्वतारतम्यता का अध्यापन ।

## फलितांश-

- मृच्छकटिकम् एवं उत्तररामचरितम् के माध्यम से संस्कृतरूपकों के नाटक एवं प्रकरण भेद से परिचित हो सकेंगे।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | मृच्छकटिकम्, प्रथम एवं द्वितीय अंक | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-2 | उत्तररामचरितम् (प्रथम अङ्क) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-3 | उत्तररामचरितम् (द्वितीयअङ्क) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-4 | उत्तररामचरितम् (तृतीयअङ्क) | क्रेडिट - 01 |

## परामृष्टग्रन्थसूची –


- मृच्छकटिकम्, डॉ. श्रीनिवासशास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ
- उत्तररामचरितम्, तारिणीशझारामनारायणवेनी प्रसाद, इलाहाबाद

# MA Sanskrit

## Semester - III

## Group – D -साहित्य

## Paper - III

## Course Code -SAN-DSCC3D

Title of Course – काव्यशास्त्रीयसिद्धान्त क्रेडिट - 04

**उद्देश्य-**

- काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों में व्यञ्जना सम्बन्धी भेदविशेषों से परिचित कराना ।
- काव्यप्रकाश के व्यञ्जनाभेद सम्बन्धी उल्लासों का विशिष्ट अध्ययन कराना।

**संगति-**

- काव्यशास्त्रीयसिद्धान्त एवं काव्यप्रकाश के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

**फलितांश-**

- काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों में व्यञ्जनाभेद सम्बन्धी विशिष्ट समझ विकसित हो सकेगी।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | काव्यप्रकाश (तृतीय उल्लास)<br>अभिधामूलध्वनि से असंलक्ष्यक्रमव्यंग्य ध्वनि पर्यन्त | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-2 | चतुर्थउल्लास<br>संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य ध्वनि से चतुर्थोल्लाससमाप्तिपर्यन्त | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-3 | पञ्चमउल्लास<br>गुणीभूतव्यङ्ग्यस्वरूपनिरूपण से गुणीभूतव्यङ्ग्यभेदनिरूपणपर्यन्त | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-4 | व्यञ्जनास्थापना से समाप्तिपर्यन्त | क्रेडिट - 01 |

**परामृष्टग्रन्थसूची –**

काव्यप्रकाश, आचार्यविश्वेश्वर, ज्ञान मंडललिमिटेड, वाराणसी।

# MA Sanskrit

## Semester-III

## Group – E भारतीय ज्ञान प्रणाली

## Paper - I

## Course Code- SAN-DSCC1E

Title of Course – भारतीयज्ञानपरम्परा का परिचय,अष्टादशविद्यास्थान एवं भारतीय शिक्षाव्यवस्था

क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- भारतीय ज्ञानप्रणाली से परिचित कराना ।
- भारतीय शिक्षाव्यवस्था से परिचित कराना ।

### संगति-

- भारतीय ज्ञानपरम्परा और भारतीय शिक्षाव्यवस्था के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश-

- भारतीय ज्ञानप्रणाली से परिचित हो सकेंगे ।
- भारतीय शिक्षाव्यवस्था से परिचित हो सकेंगे ।

इकाई-1 भारतीय ज्ञानप्रणाली की परिभाषा, अवधारणा एवं विस्तार। क्रेडिट – 01

भारतीय ज्ञानप्रणाली में संस्कृत भाषा का महत्त्व।

भारतीय ज्ञानप्रणाली का आधार भूत साहित्य और उसकी अध्ययन प्रविधि।

इकाई-2 भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था की सार्वभौमिकता क्रेडिट – 01

भगवद्गीता, अर्थशास्त्र, गुरुकुल प्रणाली, तथा नालन्दा, तक्षशिला,विक्रमशिलाविक्रमशिला, वलभी, ओदन्तपुरी,मिथिला, कांची, नादिया, पुष्पगिरि, नागार्जुनकोंडा, शारदापीठ (काश्मीर), उज्जैन, जगद्दल और सोमपुरआदि विश्वविद्यालय

इकाई-3 पुराण परम्परा का विशेष अध्ययन (लक्षण, विज्ञान एवं उद्देश्य) क्रेडिट-01

इकाई-4 चार वर्ण, चार आश्रम, चार पुरुषार्थ एवं कौटिल्य अर्थशास्त्र क्रेडिट – 01

परामृष्टग्रन्थसूची-

- Indian Knowledge Systems, 2 Volimes, Editors: Kapil Kapoor and Avadhesh Kumar Singh, Publisher: Indian Institute or Advanced Study, Shimla.

- Kautilya Arthashastra: Timeless Strategy for modern Governance Authors: Vinayak Rajat Bhat, Tajusvi Shukla.

# MA Sanskrit

## Semester-III

## Group – E भारतीय ज्ञान प्रणाली

## Paper - II

## Course Code- SAN-DSCC2E

Title of Course – प्राचीन भारत में कला, विज्ञान एवं गणित (सामान्य अध्ययन) क्रेडिट - 04

**उद्देश्य-**

- भारतीय कलाओं से परिचित कराना ।
- प्राचीन भारत के विज्ञान से परिचित कराना ।
- भारतीय अंक प्रणाली से परिचित कराना ।

**संगति-**

- भारतीय कलाओं और विज्ञान के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

**फलितांश-**

- भारतीय कलाओं से परिचित हो सकेंगे ।
- प्राचीन भारत के विज्ञान से परिचित हो सकेंगे ।
- भारतीय अंक प्रणाली से परिचित हो सकेंगे ।

इकाई-1 क्रेडिट – 01

भारतीय कलाओं का सामान्य परिचय – चतुष्षष्टिकला, नाट्यशास्त्रअभिनयदर्पण, शास्त्रीयसंगीत की विविध शैलियाँ, भारतीय नृत्य शैलियाँ, चित्रकला की प्रान्तीयशैलियाँ। अन्य क्षेत्रीयकलाएँ।

इकाई-2 क्रेडिट – 01

खगोल विज्ञान, उपनिषदों में अविनाशीऊर्जा का विज्ञान, अग्नि द्वारा परमाणुओं में गति, विद्युत्चुम्बकीय तरङ्गों का विज्ञान, विद्युत्चुम्बकीयविकिरण, विद्युत् विज्ञान, प्रकाश की गति, गति के नियमआकर्षण शक्ति का सिद्धान्त, गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त, परमाणु

इकाई-3 क्रेडिट – 01

गणित शास्त्र का इतिहास एवं गणित के क्षेत्र में भारतीयों का योगदान, प्रधानग्रन्थों का परिचय, भारतीय गणित शास्त्र एवं सिद्धान्तों का विश्व पर प्रभाव

इकाई-4 क्रेडिट – 01

भारतीय अंक प्रणाली - आर्यभटीय एवं कतिपयादिपद्धति, शून्य की अवधारणा, अंक गणित, बीजगणित, ज्यामिति, त्रिकोणमिति के प्रमुख आचार्य एवं ग्रन्थ, भू-माप की इकाईयाँ, पाई के माननिर्धारण के विषय में भारतीय अवधरणा

परामृष्टग्रन्थसूची-


- Pride of India: A Glimpse into India's Scientific Heritage Publisher: Sanskrit Bharti, New Delhi.
- A Modern Introduction to Ancient Indian Mathematics, Author: T.S Bhanu Murthy.
- Aspects on Ancient Indian Technology: H C Bhardwaj, Motilal Banarasidas Publication.
- Geometry in Ancient and Medieval India, Author: T.A Sarasvatu Amma, Motilal Banarasidas Publications.
- Vedic Physics: Keshav Dev Verma.

# MA Sanskrit

## Semester-III

## Group – E भारतीय ज्ञान प्रणाली

## Paper - III

## Course Code- SAN-DSCC3E

Title of Course – प्राचीन भारतीय समाजव्यवस्था क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- प्राचीन भारतीय समाजव्यवस्था से परिचित कराना ।
- रामायणकालीनसमाजव्यवस्था से परिचित कराना ।
- महाभारतकालीनसमाजव्यवस्था से परिचित कराना ।

### संगति-

- प्राचीन भारतीय समाजव्यवस्था और रामायण एवं महाभारत के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश-

- प्राचीन भारतीय समाजव्यवस्था से परिचित हो सकेंगे ।
- रामायणकालीनसमाजव्यवस्था से परिचित हो सकेंगे ।
- महाभारतकालीनसमाजव्यवस्था से परिचित हो सकेंगे।

इकाई-1 क्रेडिट – 01

धर्म : महाभारत, मनुस्मृति, वैशेषिक सूत्र आदि विभिन्न ग्रन्थों से परिभाषाएं और अर्थ।काम्य, नित्य, निषिद्ध, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त और उपासना।अर्थपुरुषार्थ में "अर्थ" शब्द का अर्थ – मूल और व्युत्पत्ति।
तीर्थयात्रा, त्यौहार, सप्तपुरी, बारहज्योतिर्लिंग के विषय में सामाजिक दृष्टिकोण और भारत की एकता एवं अखण्डता के लिए इनकामहत्त्व, नारदीयमनुस्मृति।

इकाई-2 क्रेडिट – 01

भगवद्गीता : भगवद्गीता अध्याय सं. १६ – दैवी और आसुरीसंपत् ।

इकाई-3 क्रेडिट – 01

रामायण :वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्रीराम का चरित्र। राज्य प्रशासन से सम्बंधित "कच्चित्सर्ग" सर्ग का अध्ययन और अर्थ का विवरण, अयोध्याकाण्डसर्ग – 100 (कच्चित्सर्ग)।

इकाई-4 क्रेडिट – 01

महाभारत : महाभारत की समीक्षा एक ज्ञान के भंडार के रूप में, विदुरनीति और राजधर्म पर महाभारत के महत्त्वपूर्णउपदेश।

परामृष्टग्रन्थसूची-

- Indian Knowledge Systems, 2 Volimes, Editors: Kapil Kapoor and Avadhesh Kumar Singh, Publisher: Indian Institute or Advanced Study, Shimla.

For All Groups

Paper - IV

Course Code -SAN-CC11

Coure Course

Title of Course – शोधपद्धति एवं तन्त्रयुक्तियाँ क्रेडिट - 04

## उद्देश्य-

- शोधपद्धति से परिचित कराना ।
- अनुसन्धान विधियों से परिचित कराना ।
- तन्त्रयुक्तियों से परिचित कराना ।

## संगति-

- शोधपद्धति और तन्त्रयुक्तियों के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

## फलितांश-

- शोधपद्धति से परिचित हो सकेंगे ।
- अनुसन्धान विधियों से परिचित हो सकेंगे ।
- तन्त्रयुक्तियों से परिचित हो सकेंगे ।

इकाई -1 क्रेडिट – 01

शोधसम्प्रत्यय एवं आवश्यकता, वैज्ञानिकविधि द्वारा शोध

शोधोपागम –प्रत्यक्षवाद एवं उत्तरप्रत्यक्षवाद

शोधसमस्या – शोधक्षेत्र, सम्बद्ध साहित्य अध्ययन, समस्या का चयनएवंसीमाङ्कन

शोधअभिकल्प– प्रयोगात्मक, अर्द्धप्रयोगात्मक, मिथ्याप्रयोगात्मक, सहसम्बन्धात्मक

शोध के प्रकार – मौलिक,व्यावहारिक,क्रियात्मक,गुणात्मकएवंमात्रात्मक

इकाई–2 क्रेडिट - 01

शोधप्रश्नप्राक्कल्पना – सम्प्रत्यय एवं प्रकार

चर– सम्प्रत्यय, प्रकार

जनसङ्ख्या –सम्प्रत्यय एवं प्रकार

प्रतिदर्शनविधियाँ – प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शन, प्रतिदर्श के गुण, सम्भावित एवं असम्भावित

गुणात्मक एवं मात्रात्मकप्रदत्तअंशों का सङ्कलन-प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार, निरीक्षण, निर्धारण एवं प्रक्षेपविधियाँ

शोधप्रक्रिया – शोध के क्रमबद्ध प्रमुख सोपान

इकाई –3 अनुसन्धानविधियाँ क्रेडिट - 01

गुणात्मकशोध – उद्देश्य, आवश्यकता एवं विधियाँ

1. दार्शनिक विधि
2. ऐतिहासिक विधि
3. प्रजातिकविधि
4. व्यक्तिवृत्ताध्ययनविधि
5. विकासात्मक अध्ययन विधि– अनुदैर्घ्य अध्ययन एवं अन्त सांस्कृतिक अध्ययन
6. विश्लेषण विधि – विषयवस्तुविश्लेषण, अभिलेखविश्लेषण( लेख एवं भाषण विश्लेषण)

(इन विधियों का अर्थ, आवश्यकता, विशेषता, एवंसोपानानि)

मात्रात्मकशोध- उद्देश्य, आवश्यकता एवं विधियाँ –

1. प्रायोगिकविधि – प्रयोगशाला प्रयोग एवं क्षेत्रप्रयोग
2. घटनोत्तरविधि– ?
3. सर्वेक्षणविधि – वर्णनात्मक एवं सह-सम्बन्धात्मक
4. सन्दर्भविधि -

(इन विधियों का अर्थ, आवश्यकता, विशेषता एवं सोपान)

इकाई - 4. शास्त्रीयशोध क्रेडिट - 01

4.1 विमर्शात्मकशोध (Critical Research)

विश्लेषणात्मकशोध (Analytical Research)

तुलनात्मकशोध (Comparative Research)

अन्तःशास्त्रीयशोध (Inter-disciplinary Research)

बहुशास्त्रीयशोध(Multi-disciplinary Research)

(इनकासम्प्रत्यय, आवश्यकता, विशेषता एवंसोपान)

4.2- प्रूफरिडिंग, डाइक्रिटिकलमार्क, शोधप्रस्ताव, सन्दर्भग्रन्थ सूची, समीक्षात्मक संस्करण की विधियाँ, पाण्डुलिपि विज्ञान।

## परामृष्टग्रन्थसूची


1. Tantrayuktis by S.R. Bhatt, Choukhamba SanskritPustakalya , Varanasi
2. The Doctorine of Tantrayuktis, Dr. W.K. Lele, Choukhamba, Surbharati Prakashan, Varanasi
3. तन्त्रयुक्तिः, वैद्यसारग्रन्थावलिः, कोट्टयनगरी, केरल
4. तन्त्रयुक्ति, वैद्य श्री हिर्लेकर, चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, वाराणसी
5. Research Methodology Methods and Techniques, C.R.Kothari, New Age International Publishers

6. Research Methodology Methods and Techniques, in Hindi, C.R.Kothari, New Age International Publishers
7. Research In Education, J.W.Best , Pearson India Education Services Pvt. Ltd
8. RESEARCH METHODOLOGY AND APPLIED STATISTICS, D.N. SANSANWAL, Shipra Publications
9. अनुसन्धानसम्पादनप्रविधिः, प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः, श्रीलालबहादुरराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, दिल्ली
10. संस्कृतशोधप्रविधिः, प्रभुनाथद्विवेदी, शारदासंस्कृतसंस्थान, वाराणसी
11. शिक्षा में क्रियात्मकानुसन्धान, प्रो. के.पी. पाण्डेय, अग्रवाल पब्लीकेशन्स, आग

MA Sanskrit

Semester-III

## For All Groups

Paper - V

Course Code -SAN-CC12

Title of Course –संस्कृतविद्या अनुसंधान की वैश्विक प्रवृत्तियाँ एवं नव अनुसंधान की सम्भावनाएँ

Global trends of Sanskrit research and possibilities of new research

Credits - 4

उद्देश्य -

- संस्कृतविद्या की वैश्विक प्रवृत्तियों से परिचित कराना ।
- संस्कृतविद्या की नई अनुसंधान संभावनाओं से परिचित कराना ।
- संस्कृत में अनुसंधान के स्रोत से परिचित कराना ।

संगति-

- संस्कृतविद्या एवं अनुसंधान के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

फलितांश-

- संस्कृतविद्या की वैश्विक प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे ।
- संस्कृतविद्या की नई अनुसंधान संभावनाओं से परिचित हो सकेंगे ।
- संस्कृत में अनुसंधान के स्रोत से परिचित हो सकेंगे ।

इकाई -1 Credits - 1

1. भारतीय ज्ञान परंपरा के अभिधान (Indian Knowledge Systems, Traditional Knowledge, Heritage, Indology, Vernacular studies, Oriental studies)
2. संस्कृत भाषा एवं साहित्य का अनुसन्धान की दृष्टि से परिचय।

3. भारतीय शिक्षणव्यवस्था का इतिहास - ज्ञानप्राप्ति का क्रम (अनुभववेद्य / विवेकात्मक /भावनात्मक/ व्यक्तिनिष्ठ/ वस्तुनिष्ठ )उपयुक्तप्रमाणशिक्षणव्यवस्था और प्रबंध (विश्वविद्यालय, पाठशाला, गुरुकुलआदि )शोध एवं शिक्षण का ध्येय (अभ्युदय / निश्रेयस )
4. भारतीय ज्ञान परंपरा और सांप्रतिकशिक्षणपद्धति की तुलनात्मकविवेचना
5. सांप्रतिकशिक्षणव्यवस्थाका इतिहास और भारत मेपाश्चात्यशिक्षा का प्रवेश (Macaulay)
6. पाश्चात्यभारतविद् एवं उनके संस्कृत विद्या अनुसंधान के उद्देश्य Western Indologists and their motivies
7. संस्कृत का वैश्विक प्रसार: दक्षिण-पूर्वएशिया, यूरोप, अमेरिका एवं अन्य क्षेत्रों में।
8. संस्कृत के प्रमुख विद्वान एवं उनका संस्कृत अनुसन्धान में योगदान (भारतीय एवं विदेशी विद्वान)।
9. संस्कृत में अनुसन्धान के स्रोत: पाण्डुलिपियाँ, शिलालेख, साहित्यिकग्रन्थ।

इकाई -2 Credits - 1

1. संस्कृत विद्या अनुसंधान की वैश्विक प्रवृत्तियों का उद्गम तथा विकास
2. संस्कृत में अनुसन्धान की पद्धतियाँ
3. संस्कृत अध्ययन की वैश्विक प्रवृत्तियाँ: आधुनिक समय में संस्कृत अध्ययन की दिशा।
4. अनुसन्धान की मूलभूत अवधारणाएँ (Research Methodology)।
5. संस्कृत पाण्डुलिपियों का डिजिटलीकरण।
6. प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण एवं संस्कृतव्याकरण (Natural Language Processing and Sanskrit grammar)।
7. संस्कृत के ऑनलाइन संसाधन: Websites, Tools, डिजिटललाइब्रेरी, ई-बुक्स, डेटाबेस।
8. संस्कृत अनुसन्धान में आर्टिफिशियलइंटेलिजेंस का उपयोग।
9. डिजिटल संसाधनों का उपयोग: डिजिटलपाण्डुलिपियाँ, ई-लाइब्रेरी, Websites, डेटाबेस
10. शोधपत्रलेखन एवं प्रकाशन की प्रक्रिया।

इकाई -3 Credits – 1

**संस्कृत में नवीन अनुसन्धान की सम्भावनाएँ**

1. संस्कृत एवं विज्ञान: गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, योग।
2. संस्कृत एवं प्रौद्योगिकी: कम्प्यूटेशनललिंग्विस्टिक्स, आर्टिफिशियलइंटेलिजेंस।
3. संस्कृत एवं पर्यावरण अध्ययन: प्राचीन ग्रन्थों में पर्यावरण चेतना।
4. संस्कृत एवं समकालीन सामाजिक मुद्दे: नारीवाद, शिक्षा, नैतिकता।

5. दार्शनिक और नैतिक अध्ययन - तुलनात्मक दर्शन: भारतीय दार्शनिक प्रणालियों (जैसे, वेदांत, न्याय, बौद्ध धर्म) की तुलना पश्चिमी दर्शन से ।
6. अध्यात्म और चेतना अध्ययन - चेतना और ध्यान: भारतीय दार्शनिक परंपराओं (जैसे, अद्वैतवेदांत, योग) में चेतना का अध्ययन आधुनिक तंत्रिका विज्ञान और मनोविज्ञान के संयोजन में खोजा जा रहा है।
7. आध्यात्मिक अभ्यास: मानसिक और शारीरिकस्वास्थ्य पर ध्यान का प्रभाव शोध रुचि का एक बढ़ता हुआ क्षेत्र है।
8. धर्म और नैतिकता: समकालीन नैतिकदुविधाओं, शासन और सामाजिक न्याय के लिए इसकी प्रासंगिकता के लिए धर्म की अवधारणा का अध्ययन किया जा रहा है।
9. ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन - भारतीय इतिहास का पुनरावलोकन: संस्कृत ग्रंथों, शिलालेखों और मौखिक परंपराओं सहित स्वदेशी स्रोतों का उपयोग करके भारतीय इतिहास का पुनर्निर्माण
10. सांस्कृतिक धरोहरसंरक्षण: संस्कृत और भारतीय ज्ञान प्रणालियों में निहित पारंपरिक कला रूपों, अनुष्ठानों और प्रथाओं का अभिलेखीकरण
11. संस्कृत के अन्तरविषयक अध्ययन: Interdisciplinary Approaches आधुनिक विज्ञान और प्राचीन ज्ञान का एकीकरण: प्राचीन भारतीय ज्ञान (जैसे, आयुर्वेद, योग, वैदिक गणित और खगोल विज्ञान) और क्वांटमभौतिकी, तंत्रिका विज्ञान मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, कला और पारिस्थितिकी

इकाई -4 Credits – 1

**संस्कृत विद्या अनुसंधान में चुनौतियां**

1. भारतीय ज्ञान परंपरा के मूलभूत विषयों की सांप्रतिक भाषा और वैश्विक स्तर पर प्रस्तुति
2. भाषांतरण से पतन। (Problem of Indic Untranslatable)
3. भारतीय ज्ञान परंपरा के मूलभूत तत्त्वों की सांप्रतिक काल मेप्रस्तुति
4. जीवन का परमध्येय - आनंद, सुख, शांति
5. भारतीयशास्त्रों के पारिभाषिकपदावली का सान्दर्भिक अर्थ विवरण
    i. इंद्रियसुख तथा इंद्रियातीत अनुभव,
    ii. ज्ञान, विज्ञान, योग, विद्या
    iii. ऋत-सत्य, धर्म, शास्त्र, पाप-पुण्य
    iv. प्रकृति-पुरुष, ब्रह्मांड–पिण्डाण्ड, प्रकृति विज्ञान-शरीर विज्ञान, अंतरंग-बहिरंग
    v. त्रिगुण, त्रिमूर्ति, देवता, यज्ञ, दान, तप
    vi. गुरु-शिष्य, विद्या, कला
    vii. जीवन, समाज, राष्ट्र, राजा
    viii. तीर्थ, आलय, त्योहार, उत्सव, आहार, विहार, वेषभूषा, मनोरञ्जन
6. 18 विद्या और 64 कला से अभ्युदय और निश्रेयससाधन

7. Oral Traditions and Non-formal ज्ञान परंपरा
8. सांप्रतिकशिक्षणव्यवस्थामे भारतीय ज्ञान का उगम और विकास
9. STEM, Humanities, Creative and Performing Arts
10. Multi-Disciplinary और Inter-Disciplinary अध्ययन क्रम
11. भारतीय ज्ञान परंपरा के लिए Multi-Disciplinary और Inter-Disciplinary studies का सदुपयोग
12. भारतीय ज्ञान और सांप्रतिकव्यवस्था के मेल के लिए षोडशसंधिस्थान और इनकेनिदर्शन
    i. आन्वीक्षिकीविभाग
    ii. इतिहास एवं सभ्यता विभाग
    iii. लौकिकशास्त्रविभाग
    iv. गणित-भौत-ज्यौतिषविभाग
    v. वाग्विभाग
    vi. राजनीति एवं अर्थशास्त्रविभाग
    vii. भैषज्य एवं आरोग्यविभाग
    viii. द्रव्य-गुण-संयोगविभाग
    ix. कृषि एवं पशुपाल्यविभाग (वार्ताविभाग)
    x. गांधर्वविभाग
    xi. यांत्रिक एवं नव्यअभियांत्रिकीविभाग
    xii. वास्तुविभाग
    xiii. शिल्प-आलेख्यविभाग
    xiv. रस-धातुविभाग
    xv. अलङ्कारादिविभाग
    xvi. शैक्षणिक-क्रीड़नीयकविभाग

## परामृष्टग्रन्थसूची


1. संस्कृत वाङ्मय काबृहद् इतिहास - आचार्यबलदेवउपाध्याय, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ
2. संस्कृत भाषा और साहित्य - डॉ. सत्यव्रतसिंह, चौखम्भाविद्याभवन, वाराणसी.।
3. संस्कृत शोधप्रविधि, २०१७, प्रो. प्रभुनाथद्विवेदी, शारदा संस्कृत संस्थानवाराणसी।
4. संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण चेतना - प्रो० उमारानीत्रिपाठी
5. संस्कृत-साहित्यस्यअध्ययनम् - डॉ. सत्यव्रत शास्त्री

6. संस्कृतस्यडिजिटलयुगः - डॉ. अम्बाकुलकर्णी

7. "संस्कृत-अनुसंधानस्यनूतनदिशाः - संस्कृत भारती प्रकाशन

8. Education in Ancient India- A. S. Altekar

9. Ancient Indian Education - *Radha Kumud Mukherjee*

10. "Sanskrit Studies: Global Perspectives" by Vempati Kutumba Sastry

11. "Sanskrit in the Modern World" by S.P. Narang

12. "The Future of Sanskrit" by Dominik Wujastyk and others

13. "Sanskrit Computational Linguistics" by Amba Kulkarni and Gerard Huet

14. "Sanskrit and Artificial Intelligence" by Rick Briggs

15. "Sanskrit Across Cultures" by Samskrita Bharati

16. "New Horizons of Research in Indology" by S.P. Gupta and K.S. Ramachandran

**Websites and Online Resources**

1. Sanskrit Documents (https://sanskritdocuments.org/)

   A comprehensive repository of Sanskrit texts, tools, and research materials.

2. The Sanskrit Library (https://www.sanskritlibrary.org/)

   Offers digital resources, tools, and research papers on Sanskrit linguistics and computational analysis.

3. Indology Research (https://indology.info/)

   A platform for scholars to share research, discuss trends, and collaborate on Sanskrit and Indology studies.

4. Sanskrit Digital Library (https://www.sanskritlibrary.org/digitalLibrary.html)

Provides access to digitized Sanskrit manuscripts and texts for research purposes.

5. Samskrita Bharati (https://www.samskritabharati.in/)

   An organization promoting Sanskrit studies globally, with resources on modern applications of Sanskrit.

6. The Muktabodha Digital Library (https://muktabodha.org/)

   A treasure trove of rare Sanskrit texts and research materials.

7. Sanskrit Studies in the West (https://www.oxfordbibliographies.com/)

   Search for bibliographies and research trends in Sanskrit studies through Oxford Bibliographies.

8. Sanskrit and AI Research (https://arxiv.org/)

   Search for papers on Sanskrit and artificial intelligence on arXiv, a repository of scientific research.

9. Sanskrit World (https://www.sanskritworld.in/)

   A platform for Sanskrit enthusiasts and researchers, offering articles, courses, and research updates.

10. Google Scholar (https://scholar.google.com/)

    Search for academic papers and trends in Sanskrit research globally.

Title of Course - Extra Curricular Activities (ECA - 2) क्रेडिट - 02

# MA Sanskrit

## Semester-4

## (Group A - Veda)

## Paper - I

## Course Code SAN-DSCC4A

Title of Course –ऋग्वेद एवं देवता क्रेडिट - 04

उद्देश्य-

- ऋग्वेद के महत्त्वसे परिचितकराना ।
- ऋग्वेद के कुछ अध्यायों का विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- निरुक्त से परिचित कराना ।
- निरुक्त के कुछ अध्यायों का विशिष्ट अध्ययन कराना ।

संगति-

- ऋग्वेद और निरुक्त के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

फलितांश-

- ऋग्वेद के महत्त्व परिचित हो सकेंगे ।
- ऋग्वेद के कुछ अध्यायों का विशिष्ट अध्ययन कर सकेंगे ।
- निरुक्त से परिचित हो सकेंगे ।
- निरुक्त के कुछ अध्यायों का विशिष्ट अध्ययन कर सकेंगे ।

इकाई -1-ऋग्वेद V1.83, VI.22, VII.71 क्रेडिट - 01
ऋग्वेद VIII.91, IX.83, X.117

इकाई-3 -निरुक्त (यास्क)अध्याय - VII (1-2 पाद) क्रेडिट - 01

इकाई-4 -निरुक्त (यास्क)अध्याय - VII (3-4 पाद) क्रेडिट - 01

इकाई-5-निरुक्त (यास्क)अध्याय - VII (5-7 पाद) क्रेडिट - 01

## परामृष्टग्रन्थसूची –


- ऋग्वेदसंहिता (सायणभाष्य सहित)
- निरुक्त, प्रो. उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, 2001

- निरुक्त (कश्यपप्रजापतिकृतनिघण्टुभाष्यरूपम्), पं.मुकुन्दझा बख्शी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली ।

# MA Sanskrit

## Semester-4

## (Group A - Veda)

## Paper - II

## Course Code- SAN-DSCC5A

Title of Course - प्रातिशाख्य एवं स्वर-प्रक्रिया क्रेडिट - 04

उद्देश्य-

- प्रातिशाख्य से परिचित कराना ।
- ऋक्प्रातिशाख्य का विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- सिद्धान्तकौमुदी के स्वरप्रक्रिया से परिचित कराना ।

संगति-

- प्रातिशाख्य एवं स्वर प्रक्रिया के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

फलितांश-

- प्रातिशाख्य से परिचित हो सकेंगे ।
- ऋक्प्रातिशाख्य का विशिष्ट अध्ययन कर सकेंगे ।
- सिद्धान्तकौमुदी के स्वरप्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे ।

ऋक्प्रातिशाख्य (शौनक)

इकाई -1-प्रथम पटल 1-50 सूत्र क्रेडिट - 01

इकाई-2-प्रथम पटल सूत्र 51 से अध्यायान्त क्रेडिट - 01

सिद्धान्तकौमुदी–स्वरप्रक्रिया

इकाई -3-प्रारम्भ से समासस्वरपर्यन्त क्रेडिट - 01

इकाई-4-तिङन्तस्वर क्रेडिट - 01

## परामृष्टग्रन्थसूची –


- ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम् – डा. वीरेन्द्रकुमारवर्मा
- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (स्वरप्रक्रिया )
- वैदिक स्वर बोध – ब्रजबिहारीचौबे

# MA Sanskrit

## Semester-4

## (Group A - Veda)

## Paper - III

## Course Code- SAN-DSCC6A

Title of Course -श्रौतसूत्र,पाश्चात्यआलोचना एवं निबन्ध क्रेडिट - 04

**उद्देश्य-**

- वैदिक साहित्य के इतिहास से परिचित कराना ।
- पाश्चात्य वैदिक विद्वानों के योगदान से परिचित कराना ।
- कात्यायनश्रौतसूत्र से परिचित कराना ।

**संगति-**

- वैदिक साहित्य और श्रौतसूत्र के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

**फलितांश-**

- वैदिक साहित्य के इतिहास से परिचित हो सकेंगे ।
- पाश्चात्य वैदिक विद्वानों के योगदान से परिचित हो सकेंगे ।
- कात्यायनश्रौतसूत्र से परिचित हो सकेंगे ।

इकाई-1- क्रेडिट - 01

वैदिक साहित्य का इतिहास।

इकाई - 2- क्रेडिट - 01

पाश्चात्य वैदिक विद्वानों का योगदान - मैक्समूलर, मैकडॉनल, बेवर, जेकोबी, ब्लूमफील्ड, विल्सन, ग्रीफिथ, विन्टरनित्स, कीथ।

इकाई -3 वैदिक विषयों पर निबन्ध (संस्कृत-भाषा) क्रेडिट - 01

इकाई-4 कात्यायनश्रौतसूत्रअध्याय 1.1-10 क्रेडिट - 01

**परामृष्टग्रन्थसूची –**


- वैदिक साहित्य और संस्कृति - आचार्यबलदेवउपाध्याय
- Vedic Scholars from The West – Madhusudan Mishra

- कात्यायनश्रौतसूत्रम् (सरलावृत्ति, श्रीविद्याधरशर्मा )

# MA Sanskrit

## Semester– 4

## (Group B- Vyakarna)

## Paper - I

## Course Code SAN-DSCC4B

Title of Course -व्याकरणप्रक्रिया क्रेडिट - 04

उद्देश्य-

- व्याकरण प्रक्रिया से परिचित कराना ।
- अष्टाध्यायीअष्टमाध्याय का विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- सिद्धान्तकौमुदी के कुछ अंशों का विशिष्ट अध्ययन कराना ।

संगति-

- अष्टाध्यायी और सिद्धान्तकौमुदी के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

फलितांश-

- व्याकरण प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे ।
- अष्टाध्यायीअष्टमाध्याय का विशिष्ट अध्ययन कर सकेंगे ।
- सिद्धान्तकौमुदी के कुछ अंशों का विशिष्ट अध्ययन कर सकेंगे ।

अष्टाध्यायीअष्टमाध्याय

इकाई–1 तृतीयपादएवं चतुर्थपाद क्रेडिट - 01

सिद्धान्तकौमुदी –

| | | |
|---|---|---|
| इकाई –2 | स्त्री-प्रत्ययप्रकरण | क्रेडिट - 01 |
| इकाई–3 | उत्तर-कृदन्त– उणादयोबहुलम् ,3.3.1 – उद्धनोत्याधानम् 3.3.80 | क्रेडिट - 01 |
| इकाई–4 | 3.3.81 अपघनोङ्गम् – 3.3.81 – अन्वच्यानुलोम्ये 3.4.64 | क्रेडिट - 01 |

## परामृष्टग्रन्थसूची –


- वाजसनेयिप्रातिशाख्य( शुक्लयजुःप्रातिशाख्य ) – डा. वीरेन्द्रकुमारवर्मा
- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (वैदिकीप्रक्रिया ) – डा. उमाशङ्करशर्मा 'ऋषिः'
- निरुक्त( दुर्गवृत्ति सहित )

MA Sanskrit

Semester– 4

(Group B- Vyakarna)

Paper - II

Course Code SAN-DSCC5B

Title of Course –व्याकरण दर्शन क्रेडिट - 04

उद्देश्य-

- व्याकरण दर्शन से परिचित कराना ।
- वैयाकरणभूषणसार के धात्वर्थ एवं निपातार्थनिरूपण का विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- परमलघुमञ्जूषा के शक्तिनिरूपण,लक्षणानिरूपण,व्यञ्जना एवं स्फोटनिरूपण का विशिष्ट अध्ययन कराना ।

संगति-

- परमलघुमञ्जूषा के व्यञ्जना और स्फोटनिरूपण के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

फलितांश-

- व्याकरण दर्शन से परिचित हो सकेंगे ।
- वैयाकरणभूषणसार के धात्वर्थ एवं निपातार्थनिरूपण का विशिष्ट अध्ययन कर सकेंगे ।
- परमलघुमञ्जूषा के शक्तिनिरूपण,लक्षणानिरूपण,व्यञ्जना एवं स्फोटनिरूपण का विशिष्ट अध्ययन कर सकेंगे ।

वैयाकरणभूषणसार

इकाई – 1.धात्वर्थ एवं निपातार्थनिरूपण क्रेडिट - 01

परमलघुमञ्जूषा

इकाई – 2-शक्तिनिरूपण क्रेडिट - 01

इकाई – 3-लक्षणानिरूपण क्रेडिट - 01

इकाई – 4-व्यञ्जना एवं स्फोटनिरूपण क्रेडिट - 01

## परामृष्टग्रन्थसूची


- वैयाकरणभूषणसार, डॉ. चन्द्रिका प्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी.
- परमलघुमञ्जूषा, आचार्य लोकमणि दहाल, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी


MA Sanskrit

## Semester– 4

## (Group B- Vyakarna)

## Paper - III

## Course Code SAN-DSCC6B

Title of Course – वैदिक व्याकरण एवं निरुक्त क्रेडिट - 04

**उद्देश्य-**

- वैदिक व्याकरण से परिचित कराना ।
- वाजसनेयिप्रातिशाख्य के प्रथम एवं द्वितीय अध्याय का विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- सिद्धान्तकौमुदी के वैदिकी प्रक्रिया का विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- निरुक्त के प्रथम अध्याय का विशिष्ट अध्ययन कराना ।

**संगति-**

- वैदिक व्याकरण और निरुक्त के मध्यतारतम्यता का अध्यापन।

**फलितांश-**

- वैदिक व्याकरण से परिचित हो सकेंगे ।
- वाजसनेयिप्रातिशाख्य के प्रथम एवं द्वितीय अध्याय का विशिष्ट अध्ययन कर सकेंगे ।
- सिद्धान्तकौमुदी के वैदिकी प्रक्रिया का विशिष्ट अध्ययन कर सकेंगे ।
- निरुक्त के प्रथम अध्याय का विशिष्ट अध्ययन कर सकेंगे ।

वाजसनेयिप्रातिशाख्य

इकाई–1 -1 एवं 2 अध्याय क्रेडिट - 01

सिद्धान्तकौमुदी

इकाई– 2– वैदिकी प्रक्रिया क्रेडिट - 01

निरुक्त

इकाई–3- प्रथमाध्याय 1-3 पाद क्रेडिट - 01

इकाई– 4-प्रथमाध्याय 4-6 पाद क्रेडिट - 01

**परामृष्टग्रन्थसूची**


- वाजसनेयप्रातिशाख्यम्, डॉ. वीरेन्द्र कुमार वर्मा, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
- निरुक्त, प्रो. उमाशंकरशर्मा 'ऋषि', चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, 2001

- निरुक्त (कश्यपप्रजापतिकृतनिघण्टुभाष्यरूपम्), पं.मुकुन्दझाबख्शी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली ।
- वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी, आचार्य जयशंकरलाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।

# MA Sanskrit

## Semester – 4

## (Group C - Darshan)

## Paper - 1

## Course Code SAN-DSCC4C

Title of Course – मीमांसा दर्शन परिचय क्रेडिट - 04

**उद्देश्य-**

- मीमांसा दर्शन से परिचित कराना ।
- मीमांसान्यायप्रकाश का विशिष्ट अध्ययन कराना ।

**संगति-**

- मीमांसा दर्शन और मीमांसान्यायप्रकाश के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

**फलितांश-**

- मीमांसा दर्शन से परिचित हो सकेंगे ।
- मीमांसान्यायप्रकाश का विशिष्ट अध्ययन कर सकेंगे ।

मीमांसा-न्याय-प्रकाश (अपदेव से विधिपर्यन्त)

इकाई 1-मङ्गलाचरण से मत्वर्थलक्षण विचार पर्यन्त क्रेडिट - 01

इकाई 2-विधिप्रभेद से लिङ्गनिरूपणपर्यन्त क्रेडिट - 01

इकाई 3-वाक्यनिरूपण से प्रयोगविधिस्वरूपनिरूपणपर्यन्त क्रेडिट - 01

इकाई 4.1-क्रम से परिसंख्याभेदविचारपर्यन्त क्रेडिट - 01

इकाई4.2-नामधेयस्वरूपनिरूपण से ग्रन्थान्तपर्यन्त

परामृष्टग्रन्थसूची

- मीमांसान्यायप्रकाश, डॉ. दयाशंकर शास्त्री, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

MA Sanskrit

Semester – 4

(Group C - Darshan)

Paper - II

Course Code SAN-DSCC5C

Title of Course – वेदान्त दर्शन क्रेडिट - 04

उद्देश्य-

- वेदान्त दर्शन से परिचित कराना ।
- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यसहित विशिष्ट अध्ययन कराना ।

संगति-

- वेदान्त दर्शन और ब्रह्मसूत्र के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

फलितांश-

- वेदान्त दर्शन से परिचित हो सकेंगे ।
- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यसहित विशिष्ट अध्ययन कर सकेंगे ।

ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य (1.1.1-4)

इकाई 1-भाष्य भूमिका क्रेडिट - 01

इकाई 2- 1.1.1 भाष्य क्रेडिट - 01

इकाई 3- 1.1.2 भाष्य क्रेडिट - 01

इकाई 4.1- 1.1.3 भाष्य क्रेडिट - 01

इकाई4.2- 1.1.4 भाष्य

परामृष्टग्रन्थसूची

- ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य (चतुःसूत्री) आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

MA Sanskrit

Semester – 4

(Group C - Darshan)

Paper - III

Course Code- SAN-DSCC6C

Title of Course –न्यायदर्शन, निबन्ध एवं भारतीय दर्शन का इतिहास क्रेडिट - 04

## उद्देश्य-

- भारतीय दर्शन के इतिहास से परिचित कराना ।
- न्यायसूत्रके वात्स्यायनभाष्य की गम्भीर समझ विकसित करना।
- साङ्ख्य-योग, न्याय-वैशेषिक, मीमांसा-वेदान्त, चार्वाक-जैन सिद्धान्तों की गम्भीर समझ विकसित करना।

## संगति-

- न्यायसूत्र एवं वात्स्यायनभाष्य के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

## फलितांश-

- भारतीय दर्शन के इतिहास से परिचित हो सकेंगे ।
- न्यायसूत्रके वात्स्यायनभाष्य की गम्भीर समझ विकसित हो सकेगी।
- साङ्ख्य-योग, न्याय-वैशेषिक, मीमांसा-वेदान्त, चार्वाक-जैन सिद्धान्तों की गम्भीर समझ विकसित हो सकेगी।

इकाई -1-न्यायसूत्र 1.1.1 से 1.1.8 तक (वात्स्यायनभाष्यसहित) क्रेडिट - 01

इकाई 2- दर्शन के विषयों पर निबन्ध (संस्कृत-भाषा) क्रेडिट - 01

भारतीय दर्शन का इतिहास

इकाई -3-साङ्ख्य-योग, न्याय-वैशेषिक क्रेडिट - 01

इकाई -4-मीमांसा-वेदान्त, चार्वाकजैन एवं बौद्ध क्रेडिट - 01

परामृष्टग्रन्थसूची

- न्यायसूत्रम्, डॉ. महेश झा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी।

M.A. Sanskrit

Semester- 4

(Group D- Sahitya)

Paper - 1

Course Code SAN-DSCC4D

Title of Course –नाटक एवं नाट्यशास्त्र क्रेडिट - 04

## उद्देश्य-

- नाट्यशास्त्रीय तत्त्वों की गम्भीर जानकारी देना।
- नाट्यशास्त्रकी गम्भीर समझ विकसित करना।
- दशरूपक के प्रथम प्रकाश का विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- रत्नावली के प्रथम एवं द्वितीयअङ्क का विशिष्ट अध्ययन कराना ।

## संगति-

- नाट्यशास्त्र,दशरुपक और रत्नावली के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

## फलितांश-

- नाट्यशास्त्रीय त्तत्वों का अवगाहन कर सकेंगे।
- नाट्यशास्त्र की विभिन्न प्रणालियों को समझ सकेंगे।

नाट्यशास्त्र (अध्याय 1 एवं 4)

इकाई- 1-नाट्य-शास्त्र - अध्याय – 1, कारिका – 1-25, 41-46, 54-121 क्रेडिट - 01

इकाई- 2-नाट्यशास्त्र – अध्याय – 6, रसनिरूपण (अभिनव-भारती-टीका के साथ) क्रेडिट - 01

इकाई- 3– दशरूपक - प्रथम प्रकाश क्रेडिट - 01

इकाई–4.1– रत्नावली प्रथम अङ्क क्रेडिट - 01

इकाई–4.2–रत्नावलीद्वितीयअङ्क

## परामृष्टग्रन्थसूची –


- नाट्यशास्त्र, सम्पादकआचार्यबच्चूलालअवस्थी, कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन।
- नाट्यशास्त्र, बाबूलालसक्सेना, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
- दशरूपक, डॉ. भोलानाथव्यास, चौखम्भाविद्याभवन, चौकवाराणसी
- दशरूपक, श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ
- रत्नावली, डॉ. बालगोविन्दझा, चौखम्भा कृष्णदास, वाराणसी

M.A. Sanskrit

Semester- 4

(Group D- Sahitya)

Paper - II

Course Code SAN-DSCC5D

Title of Course –काव्यशास्त्र क्रेडिट - 04

**उद्देश्य-**

- काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों की विशेष समझ विकसित करना।
- ध्वनिसिद्धान्त की विशेष समझ विकसित करना
- ध्वन्यालोककी विशेष एवं गम्भीर समझ विकसित करना।
- ध्वन्यालोक प्रथम उद्योत का विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- काव्यप्रकाश के षष्ठउल्लास से अष्टमउल्लासपर्यन्त विशिष्ट अध्ययन कराना ।

**संगति-**

- ध्वन्यालोक और काव्यप्रकाश के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

**फलितांश-**

- ध्वन्यालोकके विशेष ज्ञान में पारङ्गत हो सकेंगे।
- ध्वनिसिद्धान्त की समझ विकसित हो सकेगी।
- काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों की विशेष समझ विकसित हो सकेगी।

ध्वन्यालोक

| | | |
|---|---|---|
| इकाई– 1- | प्रथम उद्योत<br>काव्यप्रकाश (6-8) | क्रेडिट – 01 |
| इकाई – 2 | उल्लास –6<br>2.1 उल्लास - 7, दोष लक्षण से अर्थदोषपर्यन्त | क्रेडिट – 01 |
| इकाई – 3 | रसदोष से दोष परीक्षा पर्यन्त | क्रेडिट – 01 |
| इकाई – 4 | उल्लास - 8, गुणालंकार लक्षण, स्वरूप तथा भेदनिरूपण | क्रेडिट - 01 |

**परामृष्टग्रन्थसूची –**

- ध्वन्यालोक, पं. रामसागरत्रिपाठी, मोतीलालबनारसीदास, वाराणसी

# M.A. Sanskrit

## Semester- 4

## (Group D- Sahitya)

## Paper - III

## Course Code SAN-DSCC6D

Title of Course –पाश्चात्त्य आलोचना एवं निबन्ध क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- रामायण का विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- महाभारत का विशिष्ट अध्ययन कराना ।
- पाश्चात्त्यआलोचकों से परिचित कराना ।

### संगति-

- रामायण एवं महाभारत के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश-

- रामायण की विशेष समझ विकसित हो सकेगी
- महाभारत की विशेष समझ विकसित हो सकेगी
- पाश्चात्त्यआलोचकों से परिचित हो सकेंगे ।

| | | |
|---|---|---|
| इकाई -1 | रामायण का विशिष्ट अध्ययन | क्रेडिट - 01 |
| इकाई-2 | महाभारत का विशिष्ट अध्ययन<br>पाश्चात्त्यआलोचना | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-3 | सुकरात,प्लेटो, अरिस्टोटल,थॉमसस्टूअर्टइलियट, आर्म्सट्रान्ग-रिचर्ड लाङ्गाइनस, होरेस | क्रेडिट – 01 |
| इकाई-4 | साहित्यशास्त्रीय विषयों पर निबन्ध, (संस्कृत भाषा) | क्रेडिट - 01 |

### परामृष्टग्रन्थसूची –

- पाश्चात्त्यकाव्यशास्त्र - डॉ. देवेन्द्रनाथशर्मा, मयूरपेपरबॉक्सनोएडा

MA Sanskrit

Semester– 4

Group – E भारतीय ज्ञान प्रणाली

Paper - I

Course Code- SAN-DSCC4E

Title of Course –कौटलीयअर्थशास्त्र तथा समाज एवं नागरिक क्रेडिट - 04

**उद्देश्य-**

- कौटलीयअर्थशास्त्रके सिद्धान्तों से परिचित कराना।
- कौटलीयअर्थशास्त्र के मूलभूत अंश का अध्ययन कराना ।

**संगति-**

कौटलीयअर्थशास्त्र और राजनीति शास्त्र के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

**फलितांश-**

- कौटलीयअर्थशास्त्र से परिचित हो सकेंगे ।
- कौटलीयअर्थशास्त्र के मूलभूत अंशों का अध्ययन करके गम्भीर समझ विकसित हो सकेगी।

इकाई-1 क्रेडिट – 01

अर्थशास्त्र का महत्त्व और अर्थशास्त्र में वर्णित विषयों का सामान्य परिचय

इकाई-2 क्रेडिट – 01

योगक्षेम (राजनीति के चतुर्विधउपाय), सप्ताङ्ग (राज्य के सातअङ्ग), षाड्गुण्य (राज्य के छह अंग)

इकाई-3 क्रेडिट – 01

राजधर्म (राजा का कर्तव्य), राजमण्डल (राजाओं का मण्डल), और धर्म जैसे आधुनिक राज्यशिल्प की सांस्कृतिक नींव (आदेश)अर्थशास्त्रकी चिन्तन परम्परा

इकाई-4 क्रेडिट – 01

भारतीय ज्ञान प्रणाली के विविध ग्रंथों में सभी के कल्याण के लिए बताए गए उपाए, गणतान्त्रिक एवं राज्य विषयक नीति

**परामृष्टग्रन्थसूची-**

- Kautilya Arthashastra: Timeless Strategy for Modern Governance, Authors: Vinayak Rajat Bhat, Tajusvi Sh

MA Sanskrit

Semester– 4

Group – E भारतीय ज्ञान प्रणाली

Paper - II

Course Code- SAN-DSCC5E

Title of Course –पाश्चात्त्य एवं आधुनिक भारतीय विचारक तथा विश्व पर योग का प्रभाव क्रेडिट - 04

**उद्देश्य-**

- पाश्चात्त्य दार्शनिक विचारकों से परिचित कराना ।
- पश्चिम पर प्रभाव छोड़ने वाले भारतीय दार्शनिक विचारकों से परिचित कराना ।
- विविध क्षेत्रों में योग इससे परिचित कराना ।

**संगति-**

- दर्शन और योग के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

**फलितांश-**

- पाश्चात्त्य दार्शनिक विचारकों से परिचित हो सकेंगे ।
- पश्चिम पर प्रभाव छोड़ने वाले भारतीय दार्शनिक विचारकों से परिचित हो सकेंगे ।
- विविध क्षेत्रों में योग इससे परिचित हो सकेंगे ।

इकाई-1 क्रेडिट - 01

इमर्सन, व्हिटमैन और थोरो, क्रिस्टोफरईशरवुड, एल्डसहक्सले, जोसेफकैंपबेल, एलनवाट्ट्स, विलियमसमरसेटमौघम ।विलियमजेम्स, बीटल्ससमूह, जॉर्जहैरिसन, तुरीयसंगीतानंद।

इकाई-2 क्रेडिट - 01

निकोलसटेस्ला, डेविडबोहम, इरविनश्रोडिंगर, कार्लसगन, फ्रिटजॉफकैप्रा, लैरीब्रिलियंट, रामदास, डैनियलगोलेमैन, पैट्रिकगेडेस, डेनिसवाइट, लियोनार्डब्लूमफील्ड, स्टीवजॉब्स, मार्कजुकरबर्ग, आर्थरशोपेनहावरआदि ।फर्डिनेंडडीसौसुरे, नोमचोम्स्कीआदि।

इकाई-3 क्रेडिट - 01

पश्चिम पर प्रभाव छोड़ने वाले दार्शनिक – स्वामीविवेकानंद, परमहंसयोगानंद श्री अरबिंदमहर्षिमहेशयोगी, आचार्यरजनीश, जे. कृष्णमूर्ति, स्वामीशिवानन्द, बी.के.एस. आयंगर, श्रीकृष्णामचारी, महर्षिरमण।

इकाई-4 क्रेडिट - 01

विविध क्षेत्रों पर योग का प्रभाव - १८वीं शताब्दी से पश्चिमी कला, संस्कृति और फिल्म पर प्रभाव, पश्चिमी साहित्य पर प्रभाव।

परामृष्टग्रन्थसूची-

- Indian Contributions to Science, Compiled by Vijnana Bharti.

# MA Sanskrit

## Semester– 4

## Group – E भारतीय ज्ञान प्रणाली

## Paper - III

## Course Code- SAN-DSCC6E

Title of Course –प्राचीन भारत एवं विश्व क्रेडिट - 04

### उद्देश्य-

- प्राचीन भारत के ज्ञान परम्परा से परिचित कराना ।
- पश्चिमी दुनिया में भारतीय ज्ञानपरम्परा के प्रभाव से परिचित कराना ।
- पूर्वी दुनिया में भारतीय ज्ञानपरंपरा के प्रभाव से परिचित कराना ।
- भारतीय मंदिरों और वास्तुकला के प्रभाव से परिचित कराना ।
- संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रभाव से परिचित कराना ।

### संगति-

- संस्कृत और अन्य भाषाओं के मध्यतारतम्यता का अध्यापन ।

### फलितांश-

- प्राचीन भारत के ज्ञान परम्परा से परिचित हो सकेंगे ।
- पश्चिमी दुनिया में भारतीय ज्ञानपरम्परा के प्रभाव से परिचित हो सकेंगे ।
- पूर्वी दुनिया में भारतीय ज्ञानपरंपरा के प्रभाव से परिचित हो सकेंगे ।
- भारतीय मंदिरों और वास्तुकला के प्रभाव से परिचित हो सकेंगे ।
- संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रभाव से परिचित हो सकेंगे ।

इकाई-1 क्रेडिट - 01

पश्चिमी दुनिया में भारतीय ज्ञानपरंपरा (IKS) का प्रभाव(मध्यएशिया और यूरोप) : प्राचीन यूरोपीय भाषाओं और उनकी पौराणिक कथाओं पर संस्कृत का प्रभाव।

प्राचीन ग्रीक के विचारकों पर भारतीय दर्शन का प्रभाव :थेल्सहैराक्लितुसपाइथागोरस, सुकरात, प्लेटो, प्लोटिनस, नियो-प्लैटोनिज्मआदि।

रोमनसाम्राज्य और अन्य प्राचीन सभ्यताओं के साथ व्यापार। मेसोपोटामिया, सुमेरिया, का साइड्ड, फारस, यज़ीदीआदि में सांस्कृतिक प्रभाव।

इकाई-2 क्रेडिट - 01

पूर्वी दुनिया में भारतीय ज्ञानपरंपरा का प्रभाव (दक्षिणपूर्वएशिया) : भारतीय संस्कृति से प्रभावित विभिन्न साम्राज्य : मातरम का साम्राज्य, मूर्तिपूजकसाम्राज्य (849-1297 सीई) (बर्मा), खमेरसाम्राज्य (802-1463 सीई), सेबूकेराजनते, अयुत्यासाम्राज्ययुग (1350-1767), श्रीविजयसाम्राज्य (650 - 1377 सीई) आदि।दक्षिण-पूर्वएशिया के भौगोलिकनामों पर भारतीय प्रभाव।

इकाई-3 क्रेडिट - 01

भारतीय मंदिरों और वास्तुकला का प्रभाव :अंकोर (कंबोडिया), पुराबेसाकिह (बाली, इंडोनेशिया), प्रंबनन (इंडोनेशिया), बाटूगुफाएं (सेलंगोर, मलेशिया), वैटफाउ (चंपासक, लाओस), श्रीवीरमकालियाममान (सिंगापुर) में बेयोन मंदिर), मरिअम्मन मंदिर (वियतनाम) आदि।

दक्षिणपूर्वएशिया के चित्रों, रंगमंच और नृत्य पर रामायण और महाभारत का प्रभाव। सारसमुच्चय (जावा और बाली की कानून की किताबें) पर मनुस्मृति का प्रभाव।

इकाई-4 क्रेडिट - 01

संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं का प्रभाव :ब्राह्मीलिपि और बर्मा, थाई, लाओस, कंबोडिया की लेखन एवं भाषाओं पर इसका प्रभाव। लगुनाकॉपरप्लेट (फिलीपीनद्वीप समूह), जापान में सिद्धम लिपि आदि।

हिंदूदेवताओं का प्रभाव :ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सरस्वती, गणेश, राम, गरुड़, नागआदि।श्रीलंका और अफ्रीका से संपर्क: कपड़ा, प्रौद्योगिकी और व्यापार: श्रीलंका में बौद्धधर्म, श्रीलंका में चोल का प्रभाव, साहित्य, जातककहानियां, अफ्रीका और भारतीय वस्त्र, अफ्रीका में स्टोनकार्वर्स, सोकोट्राद्वीप से शिलालेख।कंबोडिया संस्कृत शिलालेख

परामृष्टग्रन्थसूची-

- The Art of Ancient India: Buddhist, Hindu, Jain, Authors: Susan L. Huntington and John C Huntington.

For All Groups

Core Course

Paper - IV – Dissertation (लघुशोधप्रबन्ध)

Course Code -SAN-DISSERTATION

क्रेडिट - 06

Title of Course – Extra Curricular Activities (ECA3) क्रेडिट - 02